ओशो सुगंधा

जुलाई 2022

पठनीय एवं श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका

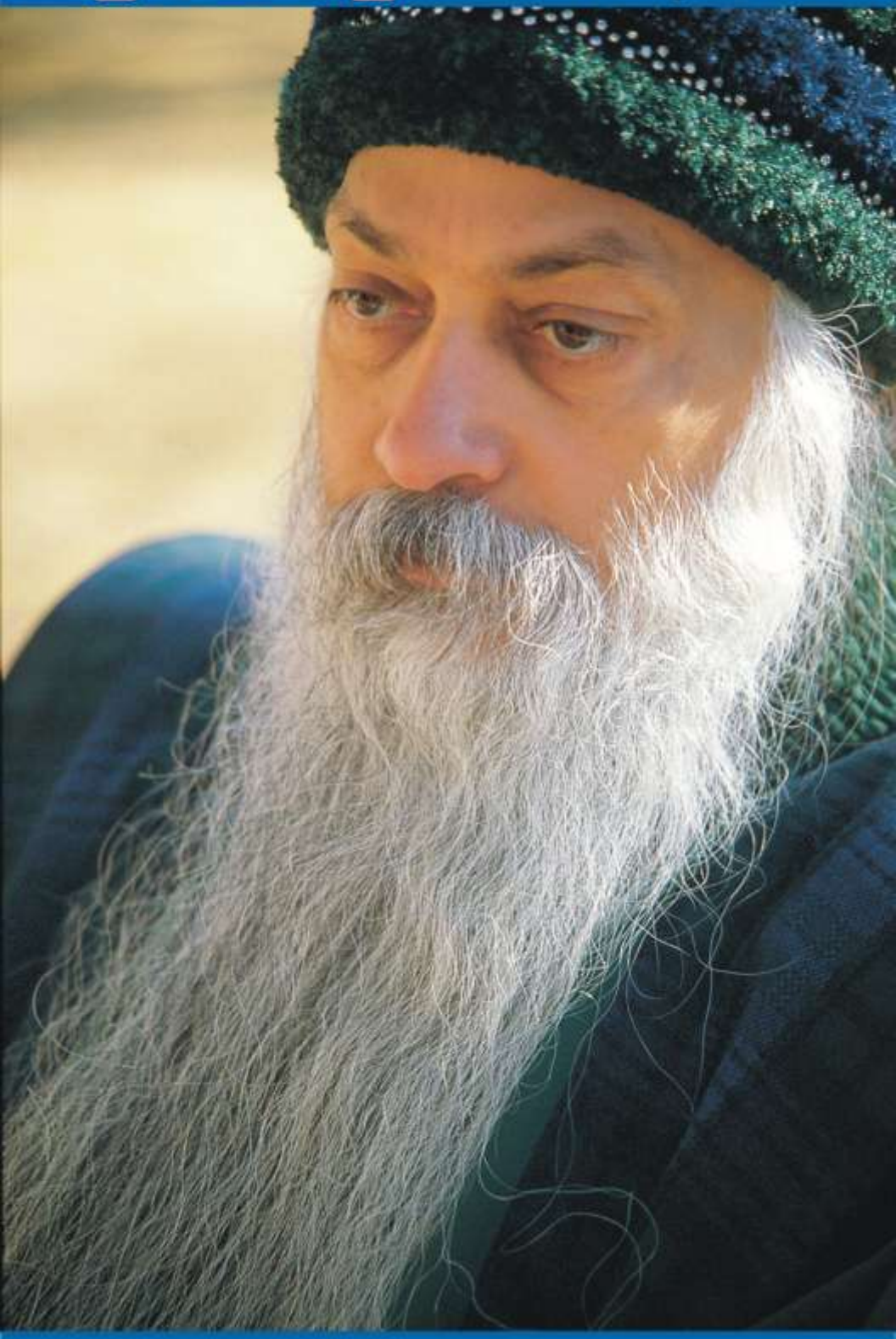

आज ओशो के संग हँस लो

जादू चल गया

ओशो सुगंधा

वर्ष-1/अंक-7
जुलाई 2022

पठनीय एवं श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका

परमगुरू ओशो के चरणों में समर्पित

प्रेरणास्त्रोत

स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती एवं माँ अमृत प्रिया

संपादन एवं संकलन

माँ मोक्ष संगीता

अन्य सहयोग

मस्तो बाबा

कला एवं साज सज्जा

आनंद संदेश

contact@oshofragrance.org

प्रार्थना

रजनीश चंद्र विभूति ओशो, नमन तव पद पंकजम
जय हे महाज्योति, महा आकाश जय तेजो बलम
ओशो मेरे ओशो... प्यारे सदगुरु ओशो
सुन्दर छवि है देह में, मानव की लीलामय प्रभु
नव कमल लोचन चंद्रमुख, वाणी विलक्षण अमृतम
ओशो मेरे ओशो... प्यारे सदगुरु ओशो
हो मुक्त तुम निष्काम तुम, आनंदमय सतनाम तुम
सुमिरन से जीवन हो रहा, सत्यं शिवं अति सुन्दरम
ओशो मेरे ओशो... प्यारे सदगुरु ओशो
तुम जन्म मृत्यु से परे, हो सर्व पातक नाशनम
आनन्द सिंधु सर्वव्यापक, ज्ञानमय अखिलेश्वरम
ओशो मेरे ओशो... प्यारे सदगुरु ओशो
गुरुवर तुम्हारे ज्ञान से, है विश्व यह आलोकमय
तुम चेतना के सूर्य हो, सौभाग्य मंगल दर्शनम
ओशो मेरे ओशो... प्यारे सदगुरु ओशो
स्वीकार हो अश्रु भरी, अनुग्रह-मयी ये प्रार्थना
निर्वाण रूप समर्थ सदगुरु, मुक्ति-पंथ प्रवर्तकम
ओशो मेरे ओशो... प्यारे सदगुरु ओशो

ओशो सुगंधा

पठनीय एवं श्रवणीय
मासिक ई-पत्रिका की **विशेषताएं**

यह एक जीवंत पत्रिका है
नीचे दर्शाए गए चिह्न इस पत्रिका में आपको विभिन्न जगह मिलेंगे, जिनके स्पर्श मात्र से सक्रिय हो जाएंगे

ऑडियो

इस बटन को स्पर्श करते ही आप संगीत का ऑडियो सुन अथवा डाउनलोड कर सकते हैं

वीडियो

इस बटन को स्पर्श करते ही आप वह वीडियो देख सकते हैं

व्हाट्स ऐप

इस बटन को स्पर्श करते ही आप व्हाट्स ऐप पर सम्बंधित व्यक्ति को संदेश भेज सकते हैं

गुगल मैप

इस बटन को स्पर्श करते ही आपके फ़ोन पर उस जगह का गुगल मैप खुल जाएगा

पुस्तक

इस बटन को स्पर्श करते ही आप PDF में पढ़ अथवा डाउनलोड कर सकते हैं

वेब साइट

इस बटन को स्पर्श करते ही आप सीधे उस वेब साइट पर जा सकते हैं

अनुक्रम

1. दर्शन और व्यवहारिक जीवन 06
2. How to celebrate Guru Purnima Day? 10
3. **आज ओशो के संग हॅस लो** 13
4. **जादू चल गया** 15
5. **ओशो प्रार्थना ध्यान** 16
6. **मुझसे मिलने का निकटतम द्वार–गहरा ध्यान** 17
7. **गुरु की महिमा** 18
8. ओशो का ओशनिक साहित्य 19
9. Deep Insight Hidden behind Sannyas Names 20
10. प्रश्नोत्तर 21
11. **अपनी जिम्मेवारी पहचानो** 22
12. **द इजी इज राइट** 25
13. Swami Shailendra's Videos 27
14. स्वस्थ रहें, मस्त रहें 28
15. **कमली यार दी कमली!** 29
16. **गुरु की बंदगी** 31
17. म्यूजिक एलबम – ओशो की आंखें 33
18. ओशो के श्री चरणों में अर्पित भाव–सुमन 34
19. हास्य–विनोद 35
20. राज्य की मुहर 36
21. गुरु पूर्णिमा महोत्सव आमंत्रण 38
22. आगामी कार्यक्रम 39
23. समाचार 40
24. संपर्क सूत्र व अन्य जानकारी 42
25. पूर्व के संस्करण 43

दर्शन और व्यवहारिक जीवन

–ओशो

संपादकीय नोट– ओशो का यह लेख, उन्होंने अपने मित्र 'जवाहर जैन' के नाम से 'नर्मदा' पत्रिका में प्रकाशित कराया था। जवाहर जी बी.एस सी. के छात्र थे, जिन्हें दर्शन शास्त्र का अ–ब–स भी नहीं आता था। बाद में उनका विवाह ओशो की चचेरी बहन सुषमा जी से हुआ। उन्हीं के सौजन्य से यह लेख प्राप्त हुआ है। जब जवाहर जी ओशो के पास निवेदन करने गए कि कॉलेज की पत्रिका हेतु एक लेख दीजिए, तो ओशो ने उन्हें बैठाया और करीब 30 मिनट में लिखकर दे दिया। स्मरणीय है कि इस प्रकार के अनेक लेख ओशो ने दूसरों के नाम से लिखे हैं। इस मैग्जीन की भूमिका भी ओशो द्वारा ही लिखित है।

भूमिका:

आज के कलाकार के लिए इस कथन में बड़ी चेतावनी है कि उसे आज आकाश की रंगीनियों और रूमानियों को छोड़कर ठोस धरती पर पैर रखना है और कल्पना को सत्य में परिवर्तित करना है। आज के कलाकार को आदर्श और यथार्थ का भी उचित समन्वय करना है जिसमें समाज और साहित्य का कल्याण निहित है। इस युग में 'साहित्य–देवता' बदल गया है। वैदिक काल में वरुण, इन्द्र, सूर्य; पौराणिक काल में अवतार और ऐतिहासिक काल में राजा ही साहित्यिक मंदिर में देवता बने बैठे थे। इस युग का भगवान अलग हैं, देवता अलग हैं। कल्पना के देवताओं के मंदिर के प्राचीर भग्न हो चुके हैं, मूर्तियां उठ चुकी हैं। जिन्होंने नव रूप धारण कर लिया है वे ही कुछ बच रही हैं। इस युग का देवता प्रत्यक्ष है, सच्चे अर्थ में सच्चिदानन्द है– वह कहीं नहीं मिलता, वह मनुष्य है। उससे बड़ा कोई नहीं है– मेक्सिम गोर्की के शब्दों में–

MAN -- what a proud word it is!

'इंसान : कितना गरिमामय शब्द है!'

कला, साहित्य, संस्कृति सब उसके लिए हैं, अपने आप में ये कुछ नहीं हैं। जो मनुष्य को ऊपर उठाये, जो उसका विकास करे, उसे सम्मान के जीवन का अधिकार दे, जो उसे शांति दे– वही साहित्य सत्साहित्य है। ऐसा साहित्य 'स्वान्तःसुखाय' होकर भी बहुजन–हिताय होता है।

केवल ज्ञान बोझ है, केवल श्रद्धा अंधा बना देती है। हिन्दी के प्रति हमारा जो प्रेम है, वह भी ज्ञान द्वारा चालित और श्रद्धा द्वारा अनुगमित होना चाहिये।

अंत में हमें भारतेन्दु की इन पंक्तियों पर भी विचार करना चाहिए––

'निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।

अंत में पत्रिका के संबन्ध में मुझे इतना ही कहना है कि यह आपकी ही है। अपने साथी–सहपाठियों द्वारा स्वरूपित सामग्री को अपने साथियों को भेंट करते हुए मैं प्रसन्न तो हूँ, साथ में चिंतित भी। प्रसन्न इसलिए कि मैं अपने साथियों की 'भारती' की सेवा करने का अवसर पा सका और चिंतित इसलिए कि मैं अपना उत्तरदायित्व सही और संयत रूप से निभा सका या नहीं?

अस्तु – मैं उन सभी का आभार मानता हूँ जिन्होंने पत्रिका को वर्तमान रूप देने में मुझे सहयोग दिया है।

–जवाहर जैन

★ दर्शन और व्यवहारिक जीवन ★

– जवाहर जैन बी.एस सी. (फाइनल)

जीवन के रहस्यों को समझने की व्यवस्था का नाम दर्शन है–जीवन को यदि बनाना है, व्यवस्थित करना है और विकसित करना है तो निश्चित तौर से वे आधार मानव को समझने होंगे जिन पर जीवन की मंजिल खड़ी होती है। थेल से लगा कर अलबर्ट आइंसटीन तक का सारा विकास इस प्रयत्न का ही परिणाम है। खाली खोपड़ियों के जन्म–मरण की गणनाओं का जोड़ न तो इतिहास ही है और न विकास ही। जीवन की तह में छुपी अज्ञेयता को ज्ञेयता की सीमा में लाने का नाम विकास है। दर्शन ने इसे आज तक किया है––और करता जायेगा। ज्ञान की भिन्न–भिन्न शाखाएं जिन्हें हम आज अस्तित्व में देखते हैं उनका उत्स जिज्ञासा है। जिज्ञासा दर्शन है, दर्शन जीवन का क्रियामान तत्व है। जीवन गति की शक्ति और आत्मा है। यदि कोई पूछे कि इंसान और हैवान में क्या अंतर है तो मैं कहूँगा कि इंसान के पास दर्शन है, हैवान के पास नहीं है और यही उनके बीच का अन्तर है।

मध्य युग के कुछ दार्शनिकों के कारण, जिनके लिये 'बटलर' ने कहा है कि वे दक्षिण या दक्षिण–पश्चिम मुड़े हुए बालों को दूर से देखकर विभक्त कर सकते थे, जिनकी भाषा में 'दर्शन का अर्थ : उन बातों को जिन्हें साधारण जन भी जानते हैं इस तरह रखने के मार्ग का नाम था जिससे कि लोगों को लगे कि वे उसे नहीं जानते', दर्शन धीरे–धीरे जीवन से दूर होता गया और एक दिन आया जब आकस्मिक रूप से पैदा हुआ यह असत्य, कि 'दर्शन अव्यवहारिकता को सुन्दर शब्दों में बांधने की कलामात्र है'––धीरे–धीरे सत्य में परिणत हो गया। आज स्थिति यह है कि यदि किसी से पूछो कि दर्शन क्या है ? तो वह बतायेगा कि दर्शन इस बात के पता लगाने का विज्ञान है कि दही के सहारे कुंडी है अथवा कुंडी के सहारे दही ?

दर्शन, दही और कुंडी के बीच के संबंध का ज्ञान नहीं है––दर्शन आदमी की आत्मा और उसके विश्व का विज्ञान है कि जीवन के उपभोग के यथार्थ साधन और लक्ष्य क्या हैं और उन्हें किस तरह प्राप्त किया जा सकता है ?वह तत्वज्ञान जो जीवन से संबंधित नहीं है अफीमचियों और मदकचियों की पिनक अथवा बहक हो सकता है, तत्वज्ञान नहीं। ऐसे तत्वज्ञान के संबंध में ल्यूक ने एक दिन चेतावनी दी थी–– "Accept no philosophy that will not work out in a beautiful and useful life- Take heed therefore how ye hear" -- Luke

★ दर्शन और व्यवहारिक जीवन ★

मेरी दृष्टि में जो व्यक्ति भी मस्तिष्क और उसके भीतर विचार शक्ति (rationality) लेकर आया है वह उपरोक्त शब्दों में दार्शनिक होने से नहीं बच सकता, पर यदि ऐसा किसी से कहो तो उसे ऐसा ही आश्चर्य होगा जैसा 'जोरडन' को यह सुनकर हुआ था कि वह अपने जीवन के बीते पूरे चालीस वर्ष गद्य में ही बात करता रहा है। दर्शन की भित्ति केवल बात करने पर आधारित नहीं है अपितु उसका यथार्थ लक्ष्य तो यह है कि व्यावहारिक रूप से रोजमर्रा के जीवन को अधिक से अधिक सुन्दर और सुखी कैसे बनाया जा सकता है ?'असीनारिया' में प्लाट्स ने लिखा है सिर्फ कहने का नाम कुछ भी हो, करने का नाम ही दर्शन है। गेटे ने 'फास्ट' में अपने एक पात्र के मुंह से अपना एक संदेश दिया है कि 'जीवन के सबसे बड़े कर्तव्य, अध्यात्म–शास्त्र का अध्ययन, उसके उपयोग और सौंदर्य के अध्ययन में निहित है।'

जीवन का सबसे बड़ा और जलता हुआ प्रश्न है कि आदमी को इस शोरगुल और

मुश्किलों से भरी दुनिया में शांति भी मिल सकती है या नहीं ?दर्शन कहता है कि मिल सकती है--पगलो! शांति तो तुम्हारे भीतर ही है, तुम इसे भूल गये तो कोई क्या करे! अज्ञानवश अंधेरे में भटकने वालो! प्रकाश और शांति का केन्द्र बिन्दु तुम्हारे भीतर है। आंखें खोलो और वह तुम्हें मिल जायगा!

आर्किमिडीज़ कहता था कि हर क्षण परिवर्तित होते इस विश्व में यदि मुझे एक भी स्थिर बिन्दु खड़े होने को मिल जाये तो मैं विश्व और जीवन की गति में एक महाक्रांति ला सकता हूँ।

दर्शन कहता है, तत्वज्ञान चिल्लाता है कि वह स्थिर बिन्दु तुम्हारे भीतर है-- 'नो दा सेल्फ' 'अपने को जानो' क्योंकि बिना उसे जाने तुम कुछ भी न जान सकोगे, कुछ न पा सकोगे।

अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि की एक लकीर है- 'The proper study of mankind is man'

इसी तरह ईसा का संदेश आत्मा का संदेश है--जीवन के लिए तत्वज्ञान का संदेश है।

आदमी जीवन में हुकूमत करने आता है और सत्य इसके विपरीत है कि दुनिया की अन्य चीजें उस पर हुकूमत करती हैं। वह पैदा होता है एक बादशाह की तरह और मरता है एक गुलाम की तरह। हाथ की मुट्ठियां बंद लेकर वह आता है, जिंदगी की खूनी खूंखार ऊंगलियां गले पर पड़ती हैं, मुट्ठियां खुल जाती हैं और फिर वह जीवन भर समेटने में लगा रहता है पर इससे उसे मिलता क्या है ?--कुछ भी नहीं।

दर्शन कहता है--मूर्खो, स्वर्ग की दुनिया बाहर नहीं है, वह तो तुम्हारे भीतर है, खोजो और उसे पाओ। खटखटाओ और दरवाजे तुम्हारे लिए खुल जावेंगे।

वह (दर्शन) कहता है कि शांति का एक ही मंत्र है, संतोष का, शक्ति का एक ही सूत्र है और वह है कि 'श्वेतकेतु, वह तू ही है! ...वह तू ही है।' तुम्हारी आत्मा तुम्हें बुलाती है कि सबकी शरण छोड़कर मेरी शरण में आओ, मैं तुम्हें सारे पापों से, सारे कष्टों से मुक्त कर दूँगी।

जीवन का सब कुछ मालमता--इज्जत, हुकूमत, दौलत, मनबहलाव, मित्र, संबंधी, बाल-बच्चे, देव और इष्ट वे सब तुम्हारे इस आत्मा के लिये ही प्यारे होते हैं। आत्मा ही खो जाये तो सब कुछ खो गया। 'उस एक के ही जानने से सब कुछ जाना जाता है। उसको पाकर फिर जिस वस्तु को तू चाहेगा, वह तुझे अवश्य मिलेगी। यह आत्मा ही प्रणव से, ओंकार से सूचित ब्रह्म है, सब कुछ इस आत्मा के ही भीतर है, यह जानकर जो कुछ आत्मा से चाहेगा वह मिलेगा। जिस-जिस लोक में जाना चाहेगा बिना रुकावट जा सकेगा। आत्मज्ञानी, आत्मानंदी ही तो सच्चा स्वराष्ट्र है, स्वराज्य-बाला है। उसकी गति-प्रगति का किसी भी लोक में रुकाव नहीं है।'--ये है कठोपनिषद का उपदेश, अमर संदेश जो युग-युग तक गूंजेगा।

विश्व के सारे दर्शन, सारे धर्म जीवन में शांति और संतोष के लिए एक ही तत्व का निरूपण करते हैं कि अपने को मत खोओ, और शेष सब स्वतः तुम्हारे पास चला आयेगा।

'इन्नल खासि राजू अल्लन्न जीना खसेरु अन फुसहम्।' (बड़ा नुकसान उन्होंने उठाया जिन्होंने

अपनी नफ्स (नाड़ी) को अपने कुरान आका को, अपनी आत्मा को खोया।)

तो चीजों की आसक्ति जीवन के बंधन और दुखों का कारण है, उससे ऊपर उठे, बंधन कट जायेंगे और दुखों का अन्त हो जायेगा। दर्शन कहता है कि तुममें और ईश्वर में सिर्फ इतना अंतर है कि तुम आसक्त हो और वह अनासक्त है। अनासक्त बनने का अर्थ है ईश्वर बनना। और ईश्वर बनने का अर्थ है कि फिर दुख तुम्हारे पास नहीं आ सकते।

एक बार सूरज से किसी ने पूछा कि तुम्हारा परिचय अंधेरे से है ?वह बोलाः मैं जब से पैदा हुआ हूँ, उसकी ही खोज में भटक रहा हूँ। पर मेरे मित्र! वह मुझे आज तक भी मिला नहीं।

वह तुम्हें भी नहीं मिलेगा। एक बार अपने भीतर अनासक्ति के सूर्य को भर जगा लेने की आवश्यकता है। इससे बड़ी सफलता का रहस्य आज तक विचारों की दुनिया में, दर्शन को छोड़ अन्य कोई स्पष्ट नहीं कर सका है।

विश्व में हम देखते हैं घृणा है, बेईमानी है, युद्ध है, शैतानियत है, हैवानियत है; पर इंसानियत नहीं है। दर्शन, जीवन को--इस भद्दे और कुरूप जीवन को आदमी के सुंदर और रहने योग्य जीवन में बदलना चाहता है, उसके सामने एक पूर्णतम मानव का लक्ष्य है।

बापू कहते थे हम एक साबित आदमी चाहते हैं और बापू की आत्मा से भारत का सोया दर्शन बोलता था। दर्शन का साबित आदमी कैसे पैदा हो सकता है ?'नीत्से' की कल्पना का महामानव कैसे जन्म पायेगा ?दर्शन कहता है कि उसे पैदा नहीं करना है, वह तो तुममें है, उसे सिर्फ व्यक्त होना है। मानवता का पूरा इतिहास उस पूर्णतम के व्यक्त होने का ही इतिहास है। रवि ठाकुर कहा करते थे कि ईश्वर अभी थका नहीं है, एक न एक दिन वह अपनी जोड़ का इंसान बनाकर ही छोड़ेगा।

इस ईश्वर के जोड़ के इंसान के व्यक्त होने के लिये हमें सबको उतना ही प्यार करना होगा जितना हम स्वयं अपने को करते हैं। यह होगा किस तरह ?यह होगा यह समझने से कि हम विश्व से भिन्न नहीं, उसके ही अभिन्न हिस्से हैं।

युद्ध से आतंकित और जड़वाद से जर्जरित इस विश्व को यदि विनाश से बचाना है तो इसके सिवाय कोई व्यवहारिक हल नहीं है कि हम इसे भूल जायें कि हम मिट्टी हैं। हमें अनुभव करना होगा कि हम ईश्वर हैं और जब हमें यह भान हो जायगा कि 'अहं ब्रह्मास्मि' उस दिन सारे आतंकों का अंत हो जायगा। शक्ति का यह अमर संदेश दर्शन देता है, उसके बिना आदमी के चरण कभी आगे नहीं बढ़ सकते--मिट्टी न आइंस्टीन पैदा कर सकती है, न रसल और न श०--दर्शन कहता है तुम मिट्टी नहीं हो, घड़े नहीं हो, उसके भीतर भरे जल हो। देह-बुद्धि से ऊपर उठो और प्रेम का सागर तुम्हारे स्वागत की बाट में खड़ा है।

इससे बड़ा व्यवहारिक संदेश न आज तक दिया गया है और न संभव है कि भविष्य में दिया जा सके--आदमियत को जीवित रखना है तो उसे दर्शन के चरणों में जाना ही होगा, क्योंकि दर्शन का अर्थ है जीवन के वे सिद्धांत जिन पर भविष्य का स्वर्णिम वितान खड़ा होगा।

How to celebrate Guru Purnima Day?

-Osho

An ancient parable...

ONCE UPON A TIME AN ANGEL WAS GOING back to heaven after fulfilling the errand for which he had been sent to the earth. It was a dark night, no moon in the skies, not even stars. The earth was enveloped by dark clouds. But the moment the angel was just entering into those dark clouds, he saw a miracle happening just beneath him. He saw a forest full of light. He was puzzled. He had been to this part many times, he was well-acquainted with the earth. He had never seen such a thing before. And the light was no ordinary light. It had the quality of bliss, blessing in it.

Just seeing that light, the angel felt more blissful than he had ever felt before, not even in the company of the gods, not even in heaven had he seen such a luminous phenomenon.

The light was arising out of a small mango grove and was spreading all over the forest. And it was so powerful that he could see the foliage of the trees, the flowers of the trees, and the small lake just by the side of the grove. He became intrigued. He descended back to the earth.

As he was descending he was surprised even more. There was a soundless sound permeating the whole atmosphere -- the soundless sound that is known in the East as **PRANAVA, OMKAR** -- as if the whole forest was chanting **'om'**.

It was such a benediction. And not only that; more surprises were waiting for him. The moment he descended near the grove, he felt a fragrance absolutely unknown, unheard-of, even in heaven. This was nothing earthly. It was not even heavenly. It was beyond.

He entered the grove. He could not figure it out -- what is happening there? Another surprise: a man was just sitting there under an ancient old tree, meditating. Then things were not so difficult to understand.

So he thought, "This man has become a Buddha. This man has come home... the light, the fragrance, the sound, are coming out of this man." As he came closer to this man, more and more he was filled by his presence. The whole forest was agog -- a new vibe, a new life. He could see trees blooming out of season. And there was such silence, absolute silence. And in that absolute silence there was that

soundless sound. The WHOLE forest -- the trees and the lake and the mountains -- all chanting. He fell into the feet of this man, opened his third eye -- this angel -- and tried to see what he was doing inside.

It is said that angels have the capacity to look into human minds. They can find out what thoughts are moving there. But the more he tried, the more he felt it was impossible -- there was no thought moving inside. There was utter emptiness, just nothingness. He started feeling afraid. He knows the nothingness of the sky, he knows the infinity of the sky, but this was deeper than that. It had a depth unknown to him. It was abysmal. He started feeling afraid he may get lost into it, he may not be able to return back.

But the attraction was too much. He was ready even to get lost. He tried hard, he pulled himself deeper and deeper into this silence. He ran inside this man's consciousness, but he could not find a single iota of thought. So he could not figure out what this man was doing.

He came out, turned himself into a man, bowed down, touched the feet of this man, and said, "Sir, please come out of your samadhi and enlighten me as to what is happening inside, because I don't see a single thought. Even gods are so full of thoughts! What has happened to you? You have become so utterly silent, even dead bodies are not so utterly silent! -- the old thoughts go on like old dust floating in the mind -- even if the man is dead the thoughts continue for a time. The mind goes on clicking just out of old habit. What has happened to you? You are alive!"

The man looked at the angel, didn't say a single word, but smiled. That smile was like an infection, hypnotic. And the angel felt the pull of the smile. That smile was transforming, that smile was a great challenge, that smile was a provocation, that smile was a seduction. That smile invited him to the inner world of this man. And again the man closed his eyes, but somehow the angel also felt to close his eyes. He had got the hint.

The man had said, "I cannot tell you what it is, but I can show you the way. Just sit like me, just be like me. You have looked into my emptiness, just be empty. Only by being is there a way to understanding."

And he had not uttered a single word, but that smile was his sermon. He had said all that is contained in the Vedas and the Koran and the Bible and Dhammapada and Gita. He had said all without saying a single word. He had said that which cannot be said.

And the angel closed his eyes, sat in silence, and started disappearing.

..... That angel could see the luminous grove underneath him. If you were passing by the grove you may not have seen, because that luminosity needs some opening in you. **The angel heard PRANAVA -- the soundless sound, OMKAR --** the whole forest singing a song, celebrating something. "Something of tremendous importance has happened. Trees have bloomed out of season!" He could see, but you may have passed by the grove and you may not have seen -- because to see such things, great trust is needed. To see such things, openness is needed. To see and hear such things you have to throw your garbage that you go on carrying in your head.

My feeling is that EACH of you here has passed many times around such groves -- sometimes a Buddha, sometimes a Mansoor, sometimes an Ali, and sometimes a Ramakrishna, a Raman, sometimes a Mahavir, a Zarathustra. You have passed! It is impossible that down the ages you have never come across a luminous grove -- you must have done. The greater possibility is that not only once, but many times you may have come across a luminous grove -- but you have missed. **Don't miss this time!**

And this **Guru Purnima Day is the day of all the Buddhas,** all those who have become aware. In their remembrance, become aware. The grove is here in front of you. You can see that luminous light. It is here! You can hear that celestial sound; that music is happening. And you can be soaked into my fragrance. It depends on you -- how much you are ready to take, how much you are willing to take, how much you are going to be with me, how deeply.

You can come here just to hear my words; then you will miss the real message. You can come here full of your nonsense, your argumentativeness; then you will not be able to hear what I am trying to convey. You can come here as Mohammedans, Hindus, Jains, and you will miss me -- but only you will be responsible, nobody else.

Try to understand your responsibility towards yourself. Enough you have been stumbling in darkness! When light becomes available, don't miss the opportunity. Take the jump....

There is a famous statement of Jalaluddin Rumi: "I died as mineral and became a plant. I died as plant and rose to animal. I died as animal and I was a man. Why should I fear? When was I less by dying?"

And that is the fear that comes when you come around a Master -- the fear of dying. But listen to this Rumi's statement: "Why should I fear? When was I less by dying? I died as a plant and became an animal. I died as an animal and became a man."

When you die in your Master as a man, you become divine. A Master is a death and a resurrection. This day of **Guru Purnima** is a day of death and resurrection. It is no ordinary day -- it is very symbolic. If you come to me, you come only in one way: if you come to die in me. And you will not be less by your dying -- you will be more, you will be infinitely more. You will be losing nothing and you will be gaining all.

- Zen: the path of Paradox, vol.3 Ch.1

आज ओशो के संग हँस लो

-ओशो

प्रश्न-- भगवान, साधु-महात्माओं व मुनि-महाराजों को आप गधों की उपाधि से विभूषित क्यों करते हैं ?गधा शब्द से आपका क्या तात्पर्य है ?समझाने की कृपा करें।

प्रश्नकर्ता ने अपना नाम नहीं लिखा है। पता नहीं किस गधे ने यह प्रश्न पूछा है। मालूम पड़ता है जरूर कोई गधा नाराज हो गया है। नाराज होना भी चाहिए, क्योंकि गधे इतने गये-बीते नहीं। मुझसे भूल तो हो गयी। गधे तो बड़े शालीन होते हैं। गधों का मौन देखो। यूं कभी-कभी रेंक देते हैं, मगर रेंकने में भी बड़ी अटपटी वाणी है, जिसको सधुक्कड़ी भाषा कहते हैं, कि कोई समझने वाला ही समझे तो समझे। कुछ ऐसी गहरी पते की बात कहते हैं कि जो शब्दों में आती ही नहीं; शास्त्रा जिसको कह-कह कर थक गए...। ऐसा कभी-कभी। नहीं तो यूं मौन रहते हैं। और गधों के चेहरे देखो--कैसे उदासीन, कैसे विरक्त! न कोई लाग, न कोई लगाव। अनासक्त भाव से चले जा रहे हैं। और कुछ बोझा लाद दो--कुरान लाद दो, गीता लाद दो, वेद लाद दो--कोई किसी तरह की धार्मिक मतांधता नहीं। कुरान लादो तो ठीक, वेद लादो तो ठीक, गीता रख दो तो ठीक, तो ऐसा सर्व-धर्म-समन्वय...अल्लाह-ईश्वर तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान! कुछ भेद-भाव नहीं करते, अद्वैतवादी हैं। और गधे इतने गधे नहीं होते जितना कि आमतौर से लोग सोचते हैं। पता नहीं क्यों गधे बदनाम हो गए! कैसे बदनाम हो गए! मुझे बचपन से ही गधों में रुचि रही। मेरे गांव में बहुत गधे थे--सभी जगह होते है। गधों की कहां कमी है ?घोड़े तो मेरे गांव में बहुत कम थे; बस जितने तांगे थे, थोड़े से...। और बिल्कुल मरियल घोड़े, गरीब गांव, गरीब तांगे, उनके गरीब घोड़े। किसी के ऊपर घाव बन गए हैं, हड्डी-हड्डी हो रहे हैं। खच्चर तो बिल्कुल ही नहीं थे, क्योंकि खच्चर तो पहाड़ी इलाकों में काम आते हैं। वह कोई पहाड़ी इलाका न था। मगर गधे काफी थे। अच्छे मस्त गधे थे! और मुझे बचपन से ही गधों पर चढ़ने की धुन थी। शाम हुई कि मैं गधों की तलाश में निकला। और तभी मुझे पता चला कि गधे इतने गधे नहीं, जितना लोग समझते हैं। गधे मुझे पहचानने लगे। मुझे दूर से ही देख कर एकदम रेंकने, लगते, भागने लगते। मैं भी चकित हुआ।

मैं पहले यही सोचता था कि गधे सच मैं गधे होते हैं। रात के अंधेरे में, जैसे मेरी बास भी उन्हें समझ में आने लगी। मैं कितना ही धीमे-धीमे उनके पास जाऊं...। दूसरे लोग निकल जाएं उनके बगल से, बराबर खड़े रहें। मैं उनके पास गया नहीं कि वे भागे। तब मुझे पता चला कि इतने गधे नहीं हैं। बड़े पहुंचे हुए सिद्ध हैं! अपनी मतलब की बात पहचान लेते थे, अब बाकी ऐरे-गैर नत्थू-खैरे निकल रहे हैं तो निकलने दो। इनसे क्या लेना-देना ?जैसे ही उनको दिखा कि यह आ रहा है खतरनाक आदमी और उन्होंने रेंकना शुरू किया। इसलिए मैंने कहा कि अभी गुजरात के गधों की मैं जनगणना कर रहा हूं। मेरे हाथ तो एक सूत्र लग गया। अब मैं सारे भारत के गधों की जनगणना कर लूंगा यहीं बैठे-बैठे, न कहीं गए न कहीं उठे। जब गुजरात के सब गधे रेंक चुके होंगे, तब में जाऊंगा कटक। फिर उड़ीसा के गधों की रेंक शुरू होगी। फिर चले कलकत्ता। अपना बिगड़ता क्या है ?फिर बंगाली गधों की जांच-पड़ताल कर लेंगे। जितने भी गधा बाबू होंगे उनका पता लगा लेंगे। फिर चले बिहार। अरे न कहीं आना न जाना! मगर यूं बैठे-बैठे गधों की जनगणना तो हो ही जाएगी। अपने-आप गधे बोल देंगे। यह बचपन से ही मेरा उनसे नाता है। वे मुझे देखकर एकदम छड़कते हैं, एकदम भागते हैं। तो गधे इतने तो गधे नहीं होते। इसलिए एक लिहाज से तो ठीक ही है। जिस गधे ने भी यह पूछा है, उससे मैं काफी मांगता हूं कि मुझे साधु-संतों को, मुनि-महात्माओं को गधा नहीं कहना चाहिए, क्योंकि गधों ने बेचारों ने किसी का कभी कुछ नहीं बिगाड़ा। गधे बिल्कुल निर्दोष हैं। इनके ऊपर कोई हिंदू-मुसलमान दंगे-फसाद का, मसजिद-मंदिर को जलाने का कोई आरोप नहीं कर सकता। मगर गधा शब्द का मेरा अर्थ भी समझ लो। उससे तुम्हें आसानी होगी। कम से कम मेरे संन्यासियों को आसानी होगी; कोई गधा पूछ ही बैठा तो तुमको आसानी रहेगी। कोई गधा पूछ बैठे तो उसको कहना कि है गधाराम जी...। राम तो लगा ही देना पीछे। राम लगाने से बड़ी बचत हो जाती है। जैसे ही किसी के नाम के पीछे राम लगा दो तो चित्त प्रसन्न हो जाता है उसका। तो कहना-- हे गधाराम जी आपको नाराज वगैरह होने की कोई जरूरत नहीं है। क्योंकि मेरा जो गधा शब्द का प्रयोग है, वह शार्ट फार्म है। ग अर्थात गंभीर और धा अर्थात धार्मिक। जो बहुत गंभीर रूप से धार्मिक है, उसको मैं गधा कहता हूं। और गधों को बिगाड़ना मेरा धंधा है। धा को तो रहने देता हूं, ग को मिटाता हूं। गंभीरता मिटानी है। मस्ती लानी है। नृत्य लाना है। धार्मिकता तो अच्छी है। धा यानी मेधा, प्रतिभा। ग को मिटा देना है। ग मिटाने की कोशिश करेंगे, ताकि सिर्फ धा बचे, धार्मिकता बचे, मेधा बचे। अपने से जो भी सेवा बन सकेगी, करेंगे। इसलिए गधों से मेरी प्रार्थना है, नाराज न होना। जिसकी सूरत पर सदा बारह बजे रहते हों और जो धर्म की बकवास करता फिरे--भावार्थ पंडित-पुरोहित, साधु-महात्मा संयमीत्तपस्वी, मुनि-मौलवी इत्यादि-इत्यादि। मेरा तात्पर्य कोई चौपाया गधे से नहीं था। उस बेचारे ने तो किसी का कुछ भी नहीं बिगाड़ा। ये जो दोपाये गधे हैं, इन्होंने मनुष्य-जाति का बहुत अहित किया है। इनसे छुटकारे की आवश्यकता है।

-बहुरि न ऐसा दांव-।

- Bahuri na aisa daanv

जादू चल गया

-ओशो

प्रश्नः- ऐसा कौन सा जादू है जो मुझे यहां खींच लाया है?
घर पर या बाजार में जहां भी रहता हूं आपकी याद आती रहती है
ध्यान में भी आपकी याद आती है तो आंसू बहने लगते हैं।
न कोई मांग है और न कुछ...
मैं क्या करूं?

सीताराम! इन आंसुओ में डुबकी लगाओ।
ये आंसू परम सौभाग्य के आंसू हैं! और जो अभी तुम्हारे हृदय में मेरी स्मृति है, उसी स्मृति का सहारा पकड़ पकड़ कर धीरे धीरे परमात्मा की स्मृति को जगाओ।
मुझसे तुम्हारा जो संबंध बना है, वह अंतिम नहीं है। वह अंतिम नहीं होना चाहिए।
मुझसे तुम्हारा जो संबंध बना है, उसका उपयोग कर लो। उस संबंध को परमात्मा की याद में रूपांतरित कर लो।
याद आने लगी मेरी, तो एक बात तो पक्की हो गयी कि याद की कला आ गयी।

अब जरा याद का विषय बदलना है। आधा काम तो पूरा हो गया। तैरना तो आ गया; अब पूरब तैरें कि पश्चिम तैरें, यह उतनी कठिन बात नहीं।
इसमें क्या कठिनाई है?असली बात कठिनाई की है याद।
तुम कहते हो : 'ऐसा कौन सा जादू है जो मुझे यहां खींच लाया?'
जादू चल गया! असली बात तो हो गयी!
'घर पर या बाजार में जहां भी रहता हूं आपकी याद आती रहती है। ध्यान में भी याद आती है और आंसू बहने लगते हैं
अब धीरे-धीरे मेरी इस याद को परमात्मा की याद में रूपांतरित करो।
इसलिए गुरु को परमात्मा कहा है; क्योंकि गुरु को धीरे-धीरे, धीरे-धीरे रूपांतरित कर लेना है परमात्मा में।
गुरु सिर्फ शिष्य के लिए परमात्मा है, सभी के लिए नहीं। और उसको परमात्मा मानने के पीछे बड़ा राज है।
राज यही है कि अगर वह परमात्मा है, तो ही हम उससे परमात्मा पर छलांग लगा सकेंगे, नहीं तो छलांग नहीं लग पायेगी।
गुरुर्ब्रह्मा...।
गुरु से तो शुरुआत है। वह तो बीज है। गुरु ने हाथ पकड़ लिया। अब जल्दी ही गुरु का हाथ परमात्मा के हाथ में रूपांतरित होना चाहिए।
याद आने लगी, शुभ घड़ी आ गयी। आंसू बहने लगे, बड़ा प्यारा क्षण है।
अब इसी याद को परमात्मा की याद में बदलना है। अब एक कदम और उठाना है। जब मेरी याद में इतना रस आ रहा है, तो उसकी याद में कितना रस न आयेगा!
और जब मेरी याद में इतना जादू मालूम पड़ता है,
तो उसकी याद में महा जादू नहीं हो जायेगा !!!
निश्चित हो जायेगा!

– मरो हे जोगी मरो–18

ओशो प्रार्थना ध्यान

-ओशो

इस ध्यान में आप प्रार्थना को एक ऊर्जा की घटना की तरह अनुभव कर सकते हैं, की भक्ति की तरह नहीं बल्कि एक विलीनीकरण की तरह, जैसे एक नया द्वार खुल गया हो। ऊर्जा में यह लीन होना ही प्रार्थना है। यह आपको बदलती है। एक नई सजीवता, एक नया जीवन आपमें प्रवेश करने लगता है।

अच्छा हो कि यह प्रार्थना ध्यान रात में करें। कमरे में अंधेरा हो और ध्यान के तुरंत बाद सो जाएं, या सुबह भी इसे किया जा सकता है, परंतु उसके बाद पंद्रह मिनट का विश्राम जरूरी है। वह विश्राम अनिवार्य है, अन्यथा तुम्हें लगेगा कि तुम नशे में हो, तंद्रा में हो।

निर्देशः

एक चरण दो भागों के वर्तुल के साथः (20 मिनट)

खड़े हो जाएं, आंखें बंद कर लें। दोनों हाथ आकाश की ओर उठा लें। हथेलियां ऊपर की तरफ हों और सिर आकाशोन्मुख रहे, अनुभव करें कि अस्तित्व आपने प्रवाहित हो रहा है। जैसे ही ऊर्जा या प्राण आपकी बाहों से होकर नीचे बहेगी, आपको हलके-हलके कंपन का अनुभव होगा--हवा में कंपते हुए पत्ते की भांति हो जाएं। कंपन को होने दें, उसका सहयोग करें। फिर पूरे शरीर को ऊर्जा से स्पंदित हो जाने दें, और जो भी होता है उसे होने दें।

दो या तीन मिनट बाद, या जब भी आप पूरी तरह भरा हुआ अनुभव करें, उसके बाद झुक जाएं और माथे को जमीन पर रख दें। आप बस माध्यम बन जाएं ताकि दिव्य ऊर्जा का पृथ्वी की ऊर्जा से मिलन हो सके।

अब पुनः पृथ्वी के साथ प्रवाहित होने का अनुभव करें। पृथ्वी और स्वर्ग, ऊपर और नीचे, यिन और यांग, पुरुष और स्त्री--आप बहें, घुलें, आप स्वयं को पूरी तरह छोड़ दें। अब आप नहीं हैं। आप एक हो गए, लीन हो गए।

इन दोनों चरणों को छह बार और दोहराएं ताकि प्रत्येक चक्र या ऊर्जा-केंद्र का अवरोध दूर हो सके। आप इससे अधिक बार कर सकते है परंतु इससे कम नहीं। अगर कम बार करेंगे तो बेचैनी अनुभव करेंगे और सो नहीं पाएंगे।

सुबह होते-होते तुम इतने ज्यादा ताजे, इतने ज्यादा प्राणवान अनुभव करोगे, जितना तुमने पहले कभी भी अनुभव नहीं किया होगा। एक नई सजीवता, एक नया जीवन तुममें प्रवेश करने लगेगा, और पूरे दिन तुम एक नई ऊर्जा से भरा हुआ अनुभव करोगे; एक नई तरंग होगी, हृदय में एक नया गीत और पैरों में एक नया नृत्य होगा।

ऊर्जा में लीन होना ही प्रार्थना है। यह प्रार्थना तुम्हें बदल डालती है। और जब तुम बदलते हो, तो पूरा अस्तित्व भी बदल जाता है क्योंकि तुम्हारे व्यवहार के कारण, तुम्हारे लिए पूरा अस्तित्व बदल जाता है। ऐसा नहीं है कि अस्तित्व बदल जाता है -अस्तित्व वही रहता है -परंतु अब तुम उसके साथ प्रवाहित होने लगते हो, अब कोई विरोध नहीं रह जाता है। अब कोई संघर्ष नहीं है, कोई विरोध नहीं है; तुम उसके लिए समर्पित होते हो।

मुझसे मिलने का निकटतम द्वार–ग़हरा ध्यान

–ओशो

प्रिय राज,

प्रेम!

नहीं, मेरी यात्राएं बंद होने से तुम्हारी अंतर्यात्रा नहीं रुकेगी।

शायद मुझे सामने न पाकर तुम मुझे भीतर खोजने लगोगी।

और खोजा तो वहां मैं जरूर ही मिल जाऊंगा।

और निश्चय ही उस मिलन का मूल्य ज्यादा है।

इसलिए चिंता में जरा भी न पड़ो--वरन शक्ति और संकल्प से ध्यान की गहराई में उतरो।

क्योंकि, मुझसे मिलने का निकटतम द्वार वही है।

25-2-71

(प्रतिः श्रीमती राज शर्मा, द्वारा--श्री सरदारी लाल शर्मा, 54614 प्रताप गली, प्रताप बाजार, अमृतसर, पंजाब)

गुरु की महिमा

प्रवचन स्रोत–

1–2 जो बोलैं तो हरिकथा

3–4 लगन महूरत झूठ सब

5–6 बिन घन परत फुहार

7–9 दरिया कहै शब्द निरबाना

10–14 दीपक बारा नाम का

15–22 गुरु परताप साध की संगति

23–24 कहै कबीर दीवाना

पिव पिव लागी प्यास

मन चित चातक ज्यूं रटै, पिव पिव लागी प्यास।

नदी बह रही है, तुम प्यासे खड़े हो; झुको, अंजुली बनाओ हाथ की, तो तुम्हारी प्यास बुझ सकती है। लेकिन तुम अकड़े ही खड़े रहो, जैसे तुम्हारी रीढ़ को लकवा मार गया हो, तो नदी बहती रहेगी तुम्हारे पास और तुम प्यासे खड़े रहोगे। हाथ भर की ही दूरी थी, जरा से झुकते कि सब पा लेते। लेकिन उतने झुकने को तुम राजी न हुए। और नदी के पास छलांग मार कर तुम्हारी अंजुली में आ जाने का कोई उपाय नहीं है। और आ भी जाए, अगर अंजुली बंधी हो, तो भी आने से कोई सार न होगा।

शिष्यत्व का अर्थ है: झुकने की तैयारी। दीक्षा का अर्थ है: अब मैं झुका ही रहूंगा। वह एक स्थायी भाव है। ऐसा नहीं है कि तुम कभी झुके और कभी नहीं झुके। शिष्यत्व का अर्थ है, अब मैं झुका ही रहूंगा; अब तुम्हारी मर्जी। जब चाहो बरसना, तुम मुझे गैर–झुका न पाओगे।

–ओशो

पुस्तक के कुछ मुख्य विषय–बिंदु:

भक्ति की राह में श्रद्धा की अनिवार्यता
प्रेम समस्या क्यों बन गया है?
धर्म और नीति का भेद
समर्पण का अर्थ
शब्द से निःशब्द की ओर

विषय सूची

प्रवचन 1: गैब मांहि गुरुदेव मिल्या
प्रवचन 2: जिज्ञासा–पूर्ति : एक
प्रवचन 3: राम–नाम निज औषधि
प्रवचन 4: जिज्ञासा–पूर्ति : दो
प्रवचन 5: सबदै ही सब उपजै
प्रवचन 6: जिज्ञासा–पूर्ति : तीन
प्रवचन 7: ल्यौ लागी तब जाणिए
प्रवचन 8: जिज्ञासा–पूर्ति : चार
प्रवचन 9: मन चित चातक ज्यूं रटै
प्रवचन 10: जिज्ञासा–पूर्ति : पांच

पिव पिव लागी प्यास

Deep Insight Hidden behind Sannyas Names

-Osho

Deva means divine and Punyatam means holy, pure, simple. You have to forget the old name and remember the new. And remember the idea behind it of purity, simplicity. A person can be pure and not simple; then purity is not worth anything. You can force purity on yourself but because you force it, it will not be simple. It will be very complex. It will always carry the repressed as an undercurrent and you will be sitting on a volcano.

So when I say pure and simple, I mean it. Purity is only when it is simple, when it comes spontaneously, when it is not enforced, when you don't practise it but just allow it to flower. It is like a child. He is pure, simple, but his simplicity is not that of discipline. Once you try to discipline something, your head becomes powerful, and simplicity is of the heart. The head cannot give you simplicity.

I was just reading this evening about Pope John. He was a simple man, very simple -- so simple that many of his colleagues used to think that he was not holy. Because he was so simple they thought he was not great... not a saint at all. Before he became pope, he was a nuncio in Paris. His colleagues were very worried about him because he would mix with ordinary people and would be found in places where he should not be. He would not follow any rules and regulations of his office.

They thought him a little of a nuisance in the high circles... snobs. They used to think that he was a nuisance and not worthy of the post he was holding. He loved gossiping and telling anecdotes and stories -- and sometimes rough ones too. In the diplomatic circles he would start saying something and ladies would feel embarrassed. But he was a very simple man, just like a peasant.

Then he became pope. Everybody all over the world was very surprised at how this man could have been elected. They tried to condition him. They taught him how to behave, how to talk, saying, 'You are pope, one of the most important persons in the world, and whatsoever you say means much.' They taught him the etiquette and formalities. But he would always forget.

The first important person to come to him was Jacqueline Kennedy. They were very worried because Kennedy was the first catholic president of America and America was one of the greatest and most powerful nations, so Pope John had to talk and behave rightly. For seven days they conditioned him, and he would repeat whatsoever they were saying. Then the master of ceremonies was very happy and everything was settled. Then when Jacqueline Kennedy came, Pope John forgot everything. He opened his arms wide and cried, 'Welcome, Jacky!'

This is something very simple, peasant-like, child-like. You cannot manage it. Once you manage it, you destroy it. So what I meant by *Punyatam* is that from this very moment, start thinking in terms of being a child -- as if you don't know the world and don't know the ways of the world, as if you have no experience... as if you are just a clean slate with nothing written on it. And whatsoever gets written on it, wash it, clean it every day so it remains pure, clean. Remain clean of the past.

-A rose is a rose is a rose - 2

दिनचर्या कैसी हो ?

—स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

प्रश्न– वो कौन सी आदते हैं जो हम प्रतिदिन सुधार सकते हैं?

- ठीक समय पर सोना और जागना
- जागकर सबसे पहले प्रभु को धन्यवाद दीजिए
- फिर 30 मिनट टहलना
- पैदल घूमने के बाद 10 मिनट प्राणायाम
- फिर 10 मिनट शांत मौन ध्यान
- ठीक वक्त पर नियमित रूप से दिन भर के सभी क्रियाकलाप
- संतुलित भोजन का तय समय पर
- आधा घंटा से ज्यादा मोबाइल को ना दीजिए
- आधा घंटा से ज्यादा टेलीविजन को ना दीजिए
- एक घंटा परिवार वालों के संग बिताइए
- आधा घंटा आध्यात्मिक साहित्य पढ़िए
- सोने के पहले शांत होकर ध्यान में डूबिये अथवा प्रार्थना कीजिए।

प्रश्न– क्या हम हर उस चीज को भुला सकते है जिसको याद करके हमारा मन दुखी रहता है?

जब हम किसी चीज को भुलाने की कोशिश करते हैं तो इस प्रयत्न में खुद–ब–खुद उस चीज की याद आती है। इसलिए जानबूझकर भुलाने की हर प्रत्यक्ष यानी डायरेक्ट कोशिश नाकाम हो जाती है। इनडायरेक्ट यानी परोक्ष प्रयास करना होगा। किसी ऐसे नए रुचिकर, प्रीतिकर, व सृजनात्मक कार्य में संलग्न होना चाहिए जिसमें हमारा तन, मन, हृदय, सब कुछ पूरी तरह संलग्न हो जाए। ऐसे क्रिएटिव मूवमेंट में हम वर्तमान के क्षण में जीते हैं और अतीत की स्मृतियों के बोझ से मुक्त हो जाते हैं।

प्रश्न– यदि आपको युवा पीढ़ी को एक संक्षिप्त–सी सलाह देनी है तो वह क्या होगी?

अपने विवेक से जीना, परंपराओं को मानकर नहीं।

प्रश्न– जीवन में सफल होने के लिए क्या अधिक महत्वपूर्ण है– किस्मत या मेहनत?

निवेदन है कि व्यर्थ के दार्शनिक तर्क–वितर्क और वाद–विवाद में उलझना ठीक नहीं है। हम इतना वक्त मेहनत करने में लगाएं तो सफलता के निकट पहुंचने की यात्रा आरंभ हो जाएगी।

जो लोग बहुत विचार करते हैं, वे चलते नहीं। बुद्धिमानी, मनुष्य को मिला एक वरदान है, लेकिन बहुत लोगों के लिए यह अभिशाप साबित होता है। फिर जब वे असफल हो जाते हैं तो उनका विश्वास और दृढ़ हो जाता है कि सफलता किस्मत से मिलती है। उपरोक्त निष्कर्ष सरासर गलत है। भाग्य को मानने वाला व्यक्ति आलसी हो जाता है। उसके जीवन से कर्म की चमक खो जाती है। इसके प्रमाण केवल निजी जीवन में ही नहीं बल्कि देश और सभ्यता के लंबे इतिहास में भी देखे जा सकते हैं।

पूरब ने भगवान और भाग्य विधाता, ग्रह नक्षत्रों और जन्म कुंडलियों पर भरोसा किया। फलस्वरूप बुरी तरह पिछड़ गया। पश्चिमी मुल्कों ने स्वयं के कर्म और संकल्प को महत्ता दी। इसी वजह वे इतनी उन्नति करने में सक्षम हो गए।

प्रश्न– क्यों जीवन से ऊब पैदा होती जा रही है?

प्रेम एवं सृजनात्मकता के अभाव में ऊब उत्पन्न होती है। बोर्डम एक लक्षण हैं, बीमारी नहीं। सीधा उसका इलाज नामुमकिन है। परोक्ष तरीके से चलना होगा। अपने जीवन में प्रेम बढ़ाएं। मैत्री फैलाएं। स्नेह और वात्सल्य को जगह दें। आदर, श्रद्धा और भक्ति मे डूबें। ज्यादा से ज्यादा क्रिएटिव बनें। छोटी–छोटी चीजों में रसविभोर होना सीखें। वर्तमान के क्षण का मजा लें। प्रति के सानिध्य में कुछ घंटे अवश्य बिताएं। अपनी जीवन शैली पर पुनर्विचार कीजिए। भूल चूकों को सुधारिए। फिर ऊब विदा हो जाएगी।

अपनी जिम्मेवारी पहचानो

—स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

प्रश्न– आम धारणा प्रचलित है कि परमात्मा के हुक्म के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। तो फिर संसार में इतने अत्याचार और जुल्म क्यों होते हैं?क्या सब भगवान करवाता हैं?

आमतौर से जो धारणाए प्रचलित हैं वे आमतौर से गलत ही होती हैं। आम आदमी ही गलत हैं और अन्धा हैं। इसलिए कोई आम धारणा सही हो ही नहीं सकती। सत्य विरले लोगों ने जाना हैं। भीड़ कभी सत्य को नहीं जानती। और इसलिए भीड़ जिस बात को मानती हैं 99.9 प्रतिशत सम्भावना हैं कि वो बात गलत ही होगी। वर्ना इतने सारे गलत लोग उसे मान नहीं सकते थे।

इन व्यर्थ की बातों में ना उलझो कि जुल्म और अत्याचार कौन करवा रहा है, कि परमात्मा की मर्जी के बिना पत्ता हिलता हैं कि नहीं। जाके पत्ते से पूछो, मुझसे ना पूछो। मुझे नहीं पता। मुझे पता हैं मेरे भीतर चैतन्य हैं, बुद्धि हैं, उसके द्वारा मैं काम करता हूँ। आप अपने भीतर तलाशो। आपके भीतर मन मिलेगा। बुद्धि मिलेगी, विवेक मिलेगा, चैतन्य मिलेगा। वही आपसे यह प्रश्न भी पूछवा रहा है।

जबरदस्ती परमात्मा को बीच में ना लाओ। परमात्मा की मर्जी। कौन सिद्ध करेगा कि परमात्मा की मर्जी क्या है? अगर परमात्मा की मर्जी से अत्याचार और जुल्म होते हैं तो उसे भगवान कहोगे कि या फिर शैतान कहोगे? अगर वो ही आतंकवादी बनाता हैं और वही युद्ध करवाता हैं तो फिर वो भगवान हैं या कि शैतान हैं। व्यर्थ की बातों में ना उलझो। तुम इससे क्या लेना देना? अपने जीवन को संवारना सीखो।

तुम्हारे भीतर सदभावनाएं भी हैं और दुर्भावनाएं भी हैं। तुम्हारे भीतर की सदभावनाएं तुम्हारे चैतन्य से आती हैं। तुम्हारे भीतर की दुर्भावनाएं तुम्हारे भीतर की मूर्च्छा से आती हैं। सीधे–सीधे तथ्यों को देखो। जब तुम होशपूर्ण होते हो तुम्हारे जीवन में शुभ कर्म होते हैं। जब तुम बेहोश होते हो, समझो क्रोध का नशा तुम पर छा गया, कि कामवासना की मूर्च्छा ने घेर लिया, कि लोभ या मोह में पड़ गए तब तुमसे दुष्कृत्य होते हैं।

भगवान और शैतान की बात छोड़ो। अपने भीतर टटोलो। तब स्पष्ट हो जाएगा पुण्य से कैसे अपने जीवन को भरे और होश को बढ़ाए। पाप से कैसे बचे। वो जो जुल्म और अत्याचार करने की भावना हमारे भीतर मौजूद हैं, बुराई और अशुभ काम करने की दुर्भावना पनपती हैं? वह कहां से पनपती हैं उन जड़ों को पकड़े। उन जड़ों को उखाड़े।

छोड़ें कौन करवा रहा है, कौन नहीं करवा रहा। उसकी वो जानें। हमारे जीवन में जो हो रहा हैं, वो हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। उसके लिए हम जिम्मेवार हैं। किसी और पर जिम्मेवारी ना टालो। यह हमारे बहाने है कि परमात्मा की मर्जी के बिना पत्ता नहीं हिलता। हम कुछ करना नहीं चाहते। हम आलसी हैं। इसलिए इस प्रकार की धारणाएं हमें बड़ी पसन्द आती हैं। यही मैं कह रहा था कि आमतौर से जो धारणाएं प्रचलित हैं वो आमतौर से गलत ही होती हैं। कुल मिलाकर उनके भीतर एक सूत्र छिपा होता हैं कि आप जिम्मेवार नहीं हैं। कोई और जिम्मेवार हैं।

किसी ज़माने में माना जाता था कि विधाता ने किस्मत में लिख कर भेजा हैं सब कुछ तुम्हारे माथे पर लिखा हैं। कोई कहता हैं ग्रह नक्षत्र जिम्मेवार हैं, ग्रह दशाएं ऐसी हैं; हम क्या कर सकते हैं? कोई कहता हैं ज्योतिष का आधार लेकर, कोई कहता हैं हस्त रेखाओं में लिखा हैं। हमें ये बातें बड़ी पसन्द आती हैं। क्योंकि हमारी जिम्मेवारी समाप्त हो जाती हैं।

अगर फिर मैं बुराई कर रहा हूँ, क्रोध कर रहा हूँ, नाराज हो रहा हूँ, हिंसा कर रहा हूँ; मैं क्या कर सकता हूँ, मेरी हस्त रेखाओं में ऐसा लिखा है। मेरी जिम्मेवारी समाप्त। ये तो बड़ी चालाकी भरी बात हो गई।

फिर नया युग आया। पुरानी बातें पुरानी पड़ गई। लोगों का विश्वास हट गया ईश्वर पर से, विधाता पर से, किस्मत में से, हस्त रेखाओं में से। कार्ल मार्क्स ने कहा कि दुनिया में इतना दुःख इसलिए हैं क्योंकि वर्ग संघर्ष हैं। गरीब–अमीर का भेद हैं। जब तक ये रहेगा दुनिया में शान्ति नहीं हो सकती। हमें ये बात बड़ी पसन्द आई। आधी दुनिया कम्युनिस्ट हो गई। इसलिए नहीं कि मार्क्स का सिद्धान्त सही था। इसलिए कि हमको फिर एक नया बहाना मिल गया। हमारे जीवन के दुःख का जिम्मेवार वर्ग–भेद हैं। गरीब–अमीर का भेदभाव मिटना चाहिए। तब जाके शान्ति होगी। आधी दुनिया समाजवादी हो गई। लेकिन कोई दुःख मिटा नहीं। चीन और रूस को वापिस पूंजीवादी होना पड़ा। मार्क्स की बात गलत साबित हुई। लेकिन आधी दुनिया प्रभावित हो गई थी उससे। इसलिए नहीं कि सिद्धान्त में कोई दम हैं। बल्कि इसलिए उसने ईश्वर, विधाता, ग्रह नक्षत्र की जगह एक नया शब्द दे दिया हमारे दुःख के लिए गरीब–अमीर का भेद।

फिर आया सिगमन फ्राईड़। मनोविज्ञान का जन्मदाता सौ साल पहले। उसने कहा कि नहीं ये जो माता–पिता ने पालन–पोषण बचपन में किया हैं तुम्हारा वो जिम्मेवार हैं। जिस ढंग से तुम्हारे मन में संस्कार डाले गए हैं उसकी वज़ह से तुम ऐसे हो। हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। तुम्हारा अचेतन मन, अनकॉन्शस माइन्ड़ जिम्मेदार हैं। ये बात फिर हमें बड़ी जंची। इसलिए नहीं कि हमको पता हैं अचेतन मन के बारे में, बल्कि इसलिए एक नया बहाना मिला। अगर मैं हिंसक हूँ तो मैं क्या कर सकता हूँ। बचपन में मेरे ऐसे संस्कार पड़ गए। अगर मैं लोभी प्रवृत्ति का हूँ क्या कर सकता हूँ। मेरे अचेतन मन में लोभ मौजूद हैं। मेरा लालन–पालन ऐसा हुआ परिवार ने, समाज ने मेरे मन में लोभ बिठा दिया। मेरी जिम्मेवारी खत्म। अभी दो साल पहले जर्मन के एक जैनेटिक इंजीनियर आए हुए थे समाधि का प्रोग्राम करने। बड़े उदास, चिड़चिड़े, गुस्सैल किस्म के, डिप्रेशन के बीमार। मैंने उनसे कहा कि आप इतने नाराज़ क्यों रहते हैं हमेशा परेशान। वो कहने लगे कि मैं क्या कर सकता हूँ मेरे जीन्स ही ऐसे हैं? मैंने कहा जीन्स। वे कहने लगे कि हाँ, मेरे माता–पिता भी बहुत उदास और गुस्सैल थे, मेरे दादा–दादी भी और मेरे नाना–नानी भी। दोनों तरफ से मेरे क्रोमोसोमस, मेरे जीन्स, मेरे अनुवांशिक रचना ही ऐसी हैं। इनकी बात सुनने में बड़ी वैज्ञानिक लगेगी जैनेटिक इंजीनियर। बड़े वैज्ञानिक टरमिनोलॉजी में ये वही दकियानुसी बात कह रहे हैं कि कोई और जिम्मेवार हैं। मैं जिम्मेवार नहीं हूँ।

फिजूल की बातें ना पूछे कि परमात्मा के हूक्म के बिना पत्ता हिलता है कि नहीं। अपनी जिम्मेवारी अपने कन्धों पर ले। मेरी बात सुनकर आपको तकलीफ होगी। क्योंकि फिर सवाल ये उठता हैं कि अगर मैं दुःखी हूँ तो फिर मैं क्यों हूँ? अगर मैंने स्वयं ही अपना दुःख निर्मित किया हैं तो क्या मैं विक्षिप्त हूँ? क्या मैं पागल हूँ? लेकिन याद रखना अगर तुमने अपनी जिम्मेवारी स्वीकारी तो उसमें से बाहर निकलने का रास्ता भी निकलता है। अगर ग्रह नक्षत्र जिम्मेवार हैं या ईश्वर जिम्मेवार हैं, या हस्त रेखाएं जिम्मेवार हैं या जैनेटिक इंजीनियरिंग जिम्मेवार हैं, या समाज की रचना या आर्थिक संरचना जिम्मेवार हैं तब याद रखना फिर तुम्हारे मुक्त होने का फिर कोई उपाय नहीं। तो सुनने में बड़ी

सांत्वना मिलती हैं कि कोई और जिम्मेवार हैं। पर याद रखना फिर हमारी कोई स्वतंत्रता नहीं हैं। फिर मनुष्य होने की गरिमा नष्ट हो जाती हैं। फिर तो हम मशीन के समान हैं। किसी ने हमारे भीतर प्रोग्रामिंग भर दी हैं जैसे कम्पयूटर में प्रोग्राम डालते हैं और कम्पयूटर वैसा चलने लगता हैं। नहीं अपनी जिम्मेवारी पहचानो और इस जिम्मेवारी से ही मनुष्य की गरिमा और महिमा प्रकट होगी। फिर तुम एक स्वतंत्र व्यक्ति बन सकोगे। कहीं कोई ऊपर ईश्वर नहीं बैठा हैं जिसकी मर्जी से पत्ते हिल रहे हैं। जीवन के नियम समझो, पहचानों और अपने आत्म रूपांतरण के पथ पर चलो।

प्रश्न–हमको आवागमन के चक्कर में पड़ने से दयालू प्रभु ने रोका क्यों नहीं? समझाइए।

अगर प्रभु दयालु हैं तो बेचारे को रोकना चाहिए था। नहीं। हम अपने सुख–दुःख के निर्माता स्वयं हैं और अस्तित्व इसमें कहीं हस्तक्षेप नहीं करता। यही उसकी दया है। परमात्मा करूणावान हैं इसलिए हमारी स्वतंत्रता का सम्मान करता है। अगर हम गढ्ढे में गिरेगे वो हमें रोकेगा नहीं। गिरने देगा। क्योंकि गिरने से ही हम सबक सिखेंगे। गिरने से ही विवेक का उदय होगा। बुद्धि का विकास होगा। अगर कोई बीच में आकर हस्तक्षेप करें, रोके टोके तो हमारी बुद्धि का विकास नहीं हो सकता। इसलिए आप शक उठा रहे हैं कि परमात्मा दयालु हैं कि नहीं। उसने आवागमन के चक्कर में पड़ने से रोका क्यों नहीं। इसलिए नहीं रोका। हम स्वतंत्र हैं चक्कर में पड़ने के लिए, घमचक्कर बनने के लिए ताकि हम चेत सके; जाग सके। हमारे भीतर प्रज्ञा का विकास हो सके।

मैंने सुना हैं मुल्ला नसरूद्दीन और उसकी पत्नी पार्क में शाम को एक बैंच पर बैठे हुए थे। पेड़ों के पीछे एक युवक और एक युवती शायद प्रेमी प्रेमिका छूपे हुए हैं। उन्हें पता नहीं है कि मुल्ला नसरूद्दीन और उनकी पत्नी यहाँ बैंच पर बैठे हुए हैं। वे आपस में गपशप कर रहे हैं। प्रेमालाप चल रहा है। धीरे–धीरे बात बढ़ती ही जा रही है। और लड़की शादी के लिए कह रही है। और लड़का लग रहा है कि अब तैयार हुआ कि तब तैयार हुआ। हाँ कहने ही वाला है।

तब नसरूद्दीन की पत्नी ने कहा कि सुनो जी ज़रा खासो खकारो। बीच में कुछ रोको। वो लोग तो शादी की बात करने जा रहे हैं। और ये लड़की मुझे अच्छी नहीं लग रही। सदचरित्र नहीं लग रही इसकी बातों से। यूँ पेड़ों के पीछे छूप के प्रेमी से मिलना ये तो कोई सज्जनता का लक्षण नहीं है। ये कोई अच्छे घर की लड़की नहीं है। रोको–टोको, मना करो। ज़रा खासो खकारो। जब उनको पता चलेगा कि हम यहाँ बैठे हैं तो उनकी बातचीत बन्द होगी। नहीं तो उनकी शादी का तय होने वाला हैं। नसरूद्दीन ने कहा कि भाड़ में जाए वो। जब मैंने शादी की थी तब कौन खासा खकारा था। मरने दो सालो को। अपने आप अक्ल आएगी।

तुम कह रहे हो आवागमन के चक्कर से दयालु प्रभु ने रोका क्यों नहीं। इसलिए नहीं रोका। पड़ने दो आवागमन के चक्कर में। अपने आप अक्ल ठिकाने आएगी।

प्रश्न– समर्पण को लोग कमजोरी समझते हैं। मैं समर्पण करूं या ना करूं?

लागों से तुम्हें क्या लेना देना? लोग क्या समझते हैं अगर उसके अनुसार जीवन जीओगी तो तुम पागल हो जाओगी। उनकी एक से एक भिन्न–भिन्न, विचित्र–विचित्र धारणाएं हैं। तुम किस–किस के अनुसार जीओगी? बहुमत से जीओगी डेमोक्रेटिक बनके? कोई बहुमत नहीं हो सकता। लोगों के मत के अनुसार नहीं। अपने विवेक, अपने भाव के अनुसार जीओ। अगर तुम्हारे भीतर समर्पण का भाव आ गया है, तुम्हारे अन्दर शिष्यत्व की प्यास जागी है; अपने भाव की सुनो। लोग क्या कहते हैं उसकी चिन्ता छोड़ो। अगर मीरा ने लोगों की चिन्ता की होती। अगर बुद्ध ने, महावीर ने लोगों की चिन्ता की होती तो फिर वे बुद्ध, महावीर, मीरा कभी नहीं हो सकते थे। उन्होंने अपने भीतर की आवाज़ सुनी। अपनी अन्तरआत्मा से अपने विवेक से जीना शुरू करो।

धन्यवाद। शुभ रात्रि।

द इजी इज राइट

प्रश्नः पूछते हैं लोधीपुर पंजाब से शोभनाथ जी, सभी धर्मगुरु अपने–अपने संप्रदाय को श्रेष्ठ बतलाते हैं। ईश्वर तक पहुंचने के एकमात्र सच्चे मार्ग के रूप में निरूपित करते हैं, इससे लोग भ्रमित होते हैं। इसके बारे में ओशो का नजरिया क्या है?

ओशो का नजरिया भगवान कृष्ण की दृष्टि के बिल्कुल समान है। गीता अध्याय 18 के प्रथम तीन श्लोकों में भगवान कृष्ण अर्जुन को संन्यास के, त्याग के सभी मार्गों के बारे में बताते हैं किन्तु अपना दृष्टिकोण भी स्पष्ट करते हैं कि उन्हें स्वयं क्या पसंद है। वे कर्मफल के त्याग को असली संन्यास कहते हैं।

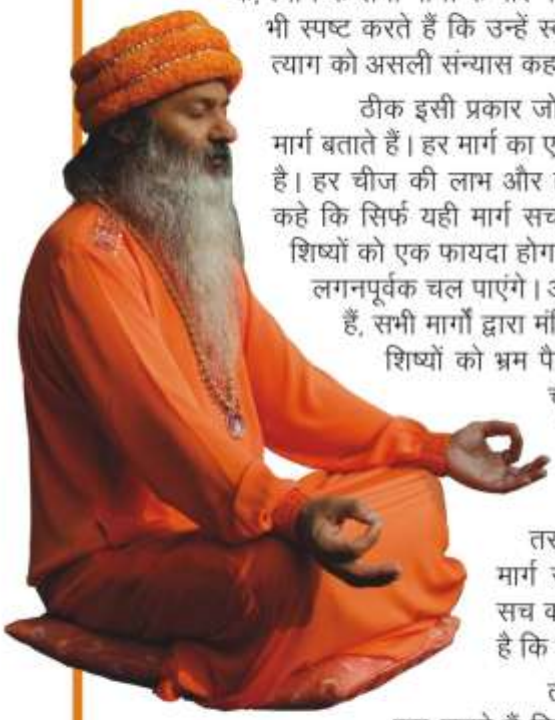

ठीक इसी प्रकार जो अन्य गुरु हैं, वे भी भिन्न–भिन्न मार्ग बताते हैं। हर मार्ग का एक फायदा है तो एक नुकसान भी है। हर चीज की लाभ और हानि बराबर होती है। यदि कोई कहे कि सिर्फ यही मार्ग सच है बाकी सब झूठ हैं तो उसके शिष्यों को एक फायदा होगा कि वे उस मार्ग पर निष्ठापूर्वक, लगनपूर्वक चल पाएंगे। अगर कोई कहे कि सभी मार्ग सच हैं, सभी मार्गों द्वारा मंजिल तक पहुंचा जा सकता है तो शिष्यों को भ्रम पैदा होगा। जैसे यदि एवरेस्ट पर चढ़ना है तो भारत की तरफ से चढ़ो तो उत्तर की दिशा की तरफ मुंह करके चढ़ना होगा, चीन से चढ़ना है तो दक्षिण की तरफ मुंह करके चढ़ना होगा। दोनों मार्ग सच हैं। लेकिन दोनों मार्गों को सच कहने से शिष्यों को भ्रम पैदा होता है कि वे क्या करें, किस मार्ग से चढ़ें।

तो आपका प्रश्न महत्त्वपूर्ण है। जो गुरु कहते हैं कि सभी मार्ग सच हैं उनके शिष्यों के भ्रमित होने की संभावना है। जो गुरु कहते हैं कि सिर्फ यही मार्ग सच है और शेष सब झूठ है उनके शिष्यों के कट्टरपंथी होने की संभावना है। नासमझ आदमी को हर जगह नुकसान ही मिलता है, समझदार आदमी हर चीज का फायदा उठा लेता है। आधुनिक युग में सारी पृथ्वी एक ग्लोबल विलेज हो गई है, हमें अन्य सभी मार्गों का पता चल गया है। अब ज्यादा बेहतर यही होगा कि हम सब मार्गों को समझें और जो मार्ग अपनी प्रकृति के अनुकूल है उसको चुनें।

अतीत में भगवान श्रीकृष्ण का नजरिया ओशो के नजरिए से बिल्कुल मिलता–जुलता था। सुनो गीता की व्याख्या करते हुए ओशो किस प्रकार कृष्ण के वचन को समझाते हैं–

'गीता भारत की खोजी गई सभी औषधियों का संग्रह है। उसमें से तुम चुन लेना; उसमें तुम्हें जो मौजूं लगे, उसमें तुम्हें जो सत्यरूप लगे। सभी सत्यरूप हैं, पर तुम्हें जो सत्यरूप लगे, तुम उसे आत्मसात कर लेना। तुम उससे यात्रा पर निकल जाना। और सभी मार्ग वहीं पहुंचा देते हैं।

मंजिल तो एक है, मार्ग अनेक हैं। दृष्टि साफ हो, तो किसी भी मार्ग से चलकर आदमी वहीं पहुंच जाता है। तुम बैलगाड़ी से चलो, थोड़ी ज्यादा देर लगेगी। तुम ट्रेन से चलो, थोड़ी जल्दी आ जाओगे। ट्रेन के कुछ लाभ हैं, बैलगाड़ी के भी कुछ लाभ हैं; कुछ हानियां बैलगाड़ी की हैं, कुछ हानियां ट्रेन की हैं।

बैलगाड़ी से चलोगे, तो गति तो नहीं होगी, लेकिन अनुभव ज्यादा होगा। गति तो बहुत धीमी होगी, लेकिन पहाड़–पर्वत, नदी–नाले सभी को तुम देखते, जीते हुए आओगे। ट्रेन से चलोगे, जल्दी पहुंच जाओगे। लेकिन इतनी तेजी से निकलती रहेगी ट्रेन कि बस झलक मिलेगी पहाड़ की, नदी की, नालों की।

हवाई जहाज से आओगे, कोई झलक भी नहीं मिलेगी। यहां बैठे नहीं कि उतरने का समय आ जाएगा। ज्यादा से ज्यादा चाय पी पाओगे। और अब और द्रुत वेग के यान बनते जा रहे हैं, जिनमें तुम पट्टी बांध पाओगे और खोल पाओगे। और पहुंच जाओगे। अनुभव से वंचित हो जाओगे।

राह का भी बड़ा आनंद है।

मेरे एक मित्र हैं, वे हमेशा पैसेंजर गाड़ी से ही चलते हैं। धनी हैं, पर बड़े समझदार हैं। दिल्ली पहुंच सकते हैं घंटे भर में; जहां रहते हैं, वहां से हवाई जहाज की भी सुविधा है। मगर वे जाते हैं ट्रेन में और वह भी पैसेंजर में! कई जगह गाड़ी बदलते हैं। तीन दिन लग जाते हैं दिल्ली पहुंचने में।

एक दफा उन्होंने मुझे अपने साथ ले लिया। मैंने कहा, यह मामला क्या है? चलो मैं भी चलूं! निश्चित, वे आनंद लेते हैं राह का। उनको एक–एक स्टेशन की गतिविधि पता है। कहां रसगुल्ले अच्छे बनते हैं! कहां भजिए अच्छे बनते हैं! बड़ा भोगते हैं मार्ग को। वे दुख पाते ही नहीं पैसेंजर में। हर स्टेशन पर उतरते हैं; स्टेशन मास्टर से मिल आते हैं; कुलियों से पहचान . . .। जिंदगी भर वे उसी रास्ते पर तीन–तीन दिन यात्रा करते हैं अनेक बार। वे कहते हैं–इतनी जल्दी भी क्या है?जाना कहां है?

वे भी ठीक कहते हैं। राह का भी अपना आनंद है। फिर राहें भी अलग–अलग हैं। मंजिल एक है।

तुम अपना रस पहचानना, अपना भाव समझना और राह चुन लेना।

कृष्ण सभी राहें बता देते हैं। फिर वे अपना भाव भी बता देंगे कि उनका भाव क्या है?उनकी क्या दृष्टि है? ऐसे तो उन्होंने अपनी दृष्टि बता ही दी। जैसे ही उन्होंने कहा कि कुछ विचक्षण पुरुष, वहीं उन्होंने अपना रस भी बता दिया। जब उन्होंने कहा कि कुछ विचक्षण पुरुष, कुछ अद्भुत पुरुष। बस, उन्होंने चुनाव भी कर दिया। बाकी को कहा, पंडित हैं, ज्ञानी हैं, समझदार हैं, विद्वान हैं; पर एक को कहा, विचक्षण, अनूठी दृष्टि वाले लोग। वहीं उन्होंने अपना झुकाव दिखा दिया।

कृष्ण स्वयं ही वे विचक्षण दृष्टि वाले पुरुष हैं। अगर उनकी बात तुम्हें जंच जाए, तो बड़ी अनूठी है। क्योंकि कुछ छोड़ना नहीं पड़ता और सब छूट जाता है; कुछ करना नहीं पड़ता और सब हो जाता है।

सार में उस विचक्षण दृष्टि की बात इतनी ही है कि तुम परमात्मा के उपकरण हो जाते हो, निमित्त मात्र। वह कराता है, तुम करते हो। वह देता है, तुम लेते हो। वह छीनता है, तुम छिन जाने देते हो। तुम बीच से हट जाते हो।

तुम कहते हो, जो तेरी मर्जी। बाजार में रखेगा, बाजार में रहेंगे। मगर वहां भी तेरा ही आनंद है, तूने ही रखा है। और तुझसे हम ज्यादा समझदार नहीं हैं। पहाड़ पर भेज देगा, पहाड़ पर चले जाएंगे। तू हमारी खुशी है। तेरे काम से जा रहे हैं, यह हमारा आनंद है। तू हमसे कुछ उपयोग ले रहा है, हम धन्यभागी हैं।

तो सत्य तक पहुंचने के अनेक मार्ग हैं, अपनी प्रकृति के अनुकूल चुन लेना। ओशो का एक वचन याद रखना 'द इजी इज राइट'। जो आपके लिए सरल, सहज है वही आपके लिए उचित है।

स्वामी शैलेन्द्र जी के वीडियो

क्या साधारण जन भी समाधी का अनुभव कर सकते है?
ध्यान का सबसे सरल तरीका कौन सा है?

परमात्मा को प्रार्थना से पाया जा सकता है या साधना से?
कुण्डलिनी जागरण किसे करना चाहिए?

Short

आत्म-ज्ञान (Self&Realization) में आत्मा नहीं बचती !
आत्म-ज्ञान (Self&Realization) क्या है?

ध्यान क्या है?:- विज्ञान है, कला है, या कुछ और..?
या बस एक हुनर !

Health

रक्तचाप – समझ व निवारण! Blood Pressure ~ Symptoms, Precaution & Cure - 1

रक्तचाप – समझ व निवारण! Blood Pressure ~ Symptoms, Precaution & Cure - 2

रक्तचाप – समझ व निवारण! Blood Pressure ~ Symptoms, Precaution & Cure - 3

रक्तचाप – समझ व निवारण! Blood Pressure ~ Symptoms, Precaution & Cure - 4

रक्तचाप – समझ व निवारण! Blood Pressure ~ Symptoms, Precaution & Cure - 5

स्वस्थ रहें, मस्त रहें

–स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

भोजन में खनिज और विटामिन की क्या महत्ता है ?

खनिज की महत्ता–

शरीर के पोषण के लिए कुछ खनिज तत्व भी शरीर को चाहिए जिनमें कैल्शियम, आयरन, मैग्नीशियम, फॉस्फोरस, पोटैशियम और सोडियम हैं। कैल्शियम हड्डियों और दांतों को मजबूत करता है। यह हमारे शरीर का रंग निखारता है तथा बाल घने व मजबूत करने में भी मदद करता है। यह हरी सब्जियों, दूध, दही, छाछ तथा पनीर आदि में पाया जाता है। आयरन हमारे शरीर में खून के लिए आवश्यक है। इसकी कमी से शरीर में खून की कमी हो जाती है। यह हरी सब्जियों, अनाज, रोटी, सेम–मटर की हरी फलियों और सूखे मेवों में पाया जाता है।

विटामिन की महत्ता–

विटामिन एक प्रकार के आर्गेनिक कम्पाउंड होते हैं जो शरीर को चलाने में मदद करते हैं। देह के हर अंग को उसके कार्य के हिसाब से अलग–अलग विटामिन की जरूरत पड़ती है। विटामिन हमारे शरीर के विभिन्न अंगों को स्वस्थ रखता है। चावल, गेहूं, दूध से बने पदार्थ, मक्खन, फल, सब्जियां, दाल आदि विटामिन का स्रोत हैं।

विटामिन 'ए' हमारी आंखों को ठीक रखता है और त्वचा को कांतिमय बनाए रखता है। विटामिन 'ए' विशेष रूप से पत्तों, दूध, पीले फल, गाजर व पपीते में पाया जाता है।

विटामिन 'बी' हमारी पाचन प्रणाली को सही रखता है। यह सभी अन्नों में पाया जाता है– विशेषकर बिना प०लिश किये हुए चावल में। इसी तरह यह फल, सब्जी तथा पत्तों आदि में पाया जाता है।

विटामिन 'सी' हमारे लिए बहुत आवश्यक है। विटामिन 'सी' इम्युनिटी को बढ़ाता है। यह खट्टे फलों में पाया जाता है जैसे आंवला, मौसमी और अनानास आदि।

विटामिन 'डी' सूर्य की रोशनी में पाया जाता है तथा शरीर में कैल्शियम की मात्रा को बढ़ाता है। यह हड्डियों को मजबूत बनाता है। यह धूप द्वारा त्वचा के माध्यम से हमारे शरीर को प्राप्त होता है।

विटामिन 'ई' हमारे रिप्रोडेक्टिव प्रणाली को स्वस्थ रखता है। यह विशेष तौर पर अंकुरित गेहूं और अंकुरित मूंग में पाया जाता है।

विटामिन 'के' खून बहने की रोकथाम के लिए जरूरी है। यदि शरीर में विटामिन 'के' की कमी होगी तो जख्म हो जाने, चोट लगने या कट जाने पर खून देर तक बहता रहेगा। यह दूब तथा अन्य हरे पत्तों में भी मिलता है।

अपनी उम्र के हिसाब से कैलोरी में कटौती करें। अपने डाइट को अपने मेटाबोलिज्म के अनुसार समायोजित करें। किसी खास खाद्य पदार्थ का त्याग करने की बजाय भोजन की मात्रा कम करें।

कमली यार दी कमली!

–मा अमृत प्रिया

खुदा एक एहसास का नाम है,
रहे सामने और दिखाई न दे।

यह तो अनुभव की बात है, संवेदना की बात है। जब अपने भीतर एहसास हो गया तब हम देखेंगे कि सर्वत्र, सबके भीतर वही मौजूद है। देखने की कला विकसित करनी होगी। जगह नहीं बदलनी है, दृष्टि साफ करनी है। फिर घर ही मंदिर है, दुकान ही मठ है, कर्म ही पूजा है। जीवन ही परमात्मा है।

सूफी गाते हैं–

हाजी लोक मक्के नू जांदे मेरा रांझा माही मक्का, नी मैं कमली हा।

मैं दीवानी हूं गुरु की, हाजी लोग तो मक्के में जाते हैं लेकिन मेरा हज तो वहां हो गया जहां मेरा सद्गुरु बैठा है। गुरु-चरणों में तीर्थ है।

ते मग हाजी ते होइयां मेरा बाबुल करदा धक्का, नी मैं कमली हा।

मैं तो अपने गुरु की हो गई, मेरी तो सगाई गुरु से हो गई। लेकिन लोग जबरदस्ती मुझे समझाते-बुझाते हैं लेकिन बात बनने वाली नहीं, मेरा तो गठबंधन ही गुरु से हो गया है। मेरा गुरु तो मेरे दिल में बैठा हुआ है, अब तो यह दिल ही मक्का हो गया है। हाजी लोग मक्के में जाते हैं लेकिन हमें तो ध्यान में डूबकर वहीं जाना है जहां सहस्रदल कमल खिलता है। वही हमारे मंदिर का शिखर है।

जित बल यार उते बल काबा अब खोल किताबा चारे, नी मैं कमली हा।

जहां मेरा गुरु है, जहां मेरा यार है वहीं काबा है। और यह सिर्फ मैं ही नहीं कह रहा हूं, यही तो चारों किताबों में लिखा हुआ है। कुरान, गीता, बाइबिल व वेदों में सब जगह लिखा हुआ है। सब ग्रंथों में पाओगे कि गुरु के चरण कमलों में ही तीर्थ है। गुरु ही तीर्थंकर है, तीर्थ बनाने वाला है। घाट निर्मित करके उस पार ले जाने वाला है।

ऐक देल जारो जेयारत हौय

हाजार हाजी तार तूल्यो नौय

केताबेते साफ लेखा जाय, ताइते बोलि रे।।

विचार से बात नहीं बनती, दिमाग से दिल की ओर आना होगा। सोचना नहीं, भावना महत्त्वपूर्ण है। ओशो तो कहते हैं लव इज गॉड, प्रेम ही परमात्मा है। तो उसका अनुभव करने के लिए हमें दिल तक उतरना होगा। हृदय की शिक्षा बाहर नहीं मिलती। बुद्धि की शिक्षा तो स्कूल और कालेजों में मिलती है। मस्तिष्क का प्रशिक्षण चलता है। लेकिन संवेदना कौन सा कालेज सिखाता है ?जागरूकता, संवेदनशीलता की शिक्षा किसी युनिवर्सिटी में नहीं मिलती। हृदय की शिक्षा देने वाली पाठशाला जगत में अभी तक नहीं खुली।

संसार में जीने के लिए शिक्षा प्रणाली तार्किक, बौद्धिक, चालाक, प्रतियोगी बनाती है। किंतु अध्यात्म में डूबने के लिए हमें हार्दिक, प्रेमल, सरल, सहज, करुणामय होना होगा। जो हार्दिक होगा वही ईश्वर की अनुभूति में जाएगा। कैसे मिलेगी हार्दिक शिक्षा ?धर्मग्रंथ और वेदान्तादि, सब तो तर्क सिखाते हैं। दुनिया के समस्त दर्शन शास्त्र तर्क-कुतर्क सिखाते हैं। दार्शनिक लोग, पंडितगण, परमात्मा के बारे में चर्चा कर रहे हैं, जबकि परमात्मा अनुभूति है। भोजन के संबंध में वाद-विाद करने से न स्वाद मिलेगा, न ही पोषण। जितनी ही सैद्धांतिक बातचीतों में उलझते जाएंगे उतने ही हम परमात्मा से दूर निकलते जाएंगे।

बाउल कहते हैं कि निःशब्द मौन में डूबना है। मनातीत-शांति में रमना है। अपने दिल में उतरना है, अंतर्यात्रा करनी है। कैसे होगी ?विचारणा से भावना पर आओ। फिर भावना से आगे है अपना होना। पहला कदम- मस्तिष्क से हृदय। दूसरा कदम- हृदय से जिस दिन हम नाभि में उतर जाते हैं उस दिन हम बाउल हो जाते हैं।

गुरु की बंदगी

बाउल फकीर ने गाया है–

आत्तारूपे शेई औधोर, शोंगी औंशें कौला तार
भेद ना जेने बोने-बोने, फिरले की हौय।।

परमात्मा के अनेक अंश एवं कलाएं हैं, सबका भेद जाने बिना दर-दर भटकने से क्या होगा।

इस संदर्भ में सूफी कहते हैं–

नाम ही नाम ले लिया जानते उसे वाकई नहीं
कहते हो खुदा खुदा देखा उसे कभी नहीं
ऐसे खुदा की बंदगी कुफ्र है बंदगी नहीं
खाली जो गुजरे इक नफस मौत है जिंदगी नहीं

परमात्मा को जाने बिना परमात्मा का नाम रटने से क्या होगा, राम-राम करने से बात बनने वाली नहीं जब तक कि हमने राम को नहीं जाना। और राम को जानने के लिए हमें गुरु के द्वार जाना होगा। गुरु के द्वार पर जब हम जाते हैं, जब हम अपने अहंकार को गलाते हैं तब हमें राम का परिचय गुरु देता है और राम से परिचित कराता है। याद रखना, जब तक अहंकार है तब तक राम नहीं है, जब राम है तब अहंकार नहीं है। और अहंकार को गलाने वाला गुरु से बड़ा मंत्र कोई नहीं है।

आइए, परमगुरु ओशो को सुनते हैं–

'तत्त्वमसि! तब फिर तुम वही हो जो परमात्मा है। फिर जरा भी

भेद नहीं। भेद कभी था भी नहीं। तुमने ही भ्रांति बना ली थी तो भेद हो गया था। तुमने ही एक लक्ष्मण रेखा खींच रखी थी अपने चारों तरफ और मान लिया था कि इसके बाहर नहीं जा सकता हूं। बस, मानने की बात थी, ख्याल रखना। लक्ष्मणरेखाएं किसी को रोक नहीं सकतीं। बस, मानने की बात है। और अगर मान लो तो रोक लेती हैं।

अहंकार सिर्फ एक मानी हुई भ्रांति है जो बचपन से हमें समझायी गई है कि तुम हो; तुम अलग हो; कि तुम भिन्न हो; कि तुम्हें कुछ दुनिया में करके दिखाना है; कि तुम्हें नाम छोड़ जाना है; कि इतिहास में तुम्हें अपने चिह्न छोड़ जाने हैं, ऐसे ही मत मर जाना, यह लक्ष्मणरेखा गहरी हो गई है।

इस लक्ष्मणरेखा को मिटाने के लिए कुछ उपाय खोजने जरूरी हैं।

गुरु के चरणों में सिर रखना बहुत उपायों में एक उपाय है और बहुत कारगर उपाय है। क्योंकि मंदिर की मूर्ति के सामने भी तुम सिर रख सकते हो लेकिन कारगर नहीं होगा। क्योंकि मंदिर पत्थर की मूर्ति है, उसके सामने झुकने में तुम्हारे अहंकार को चोट नहीं लगती। जब तुम अपने ही जैसे मांस-मज्जा के बने हुए मनुष्य के सामने झुकते हो तब चोट लगती है। पत्थर के सामने झुकने में कोई अड़चन नहीं है। आकाश में बैठे परमात्मा के सामने झुकने में कोई अड़चन नहीं है। कृष्ण, राम, बुद्ध, अतीत में हुए सत्पुरुषों के सामने झुकने में कोई अड़चन नहीं है। लेकिन तुम्हारे सामने जो मौजूद हो, तुम्हारे जैसा हो, भूख लगती हो, प्यास लगती हो, सर्दी-धूप लगती हो, बीमार होता हो, बूढ़ा होता हो, ठीक तुम जैसा हो, उसके सामने झुकने में बड़ी अड़चन होती है। अहंकार कहता है इसके सामने क्यों झुकूं?यह तो मेरे जैसा ही है। मुझमें-इसमें भेद क्या है?अहंकार बचाव करता है। इसलिए जीवित सदगुरु के सामने जो झुक गया उसका अहंकार तत्क्षण गिर जाता है। मगर यह मत सोचना कि सिर्फ झुकने से गिर जाता है। झुकना औपचारिक भी हो सकता है-जैसा इस देश में है। इस देश में झुकना औपचारिक हो गया है। लोग झुक जाते हैं, झुकने का कोई ख्याल ही नहीं आता। झुकते रहे हैं। जो आया उसके सामने झुकते रहे हैं। झुकना एक शिष्टाचार हो गया है। जैसे पश्चिम में लोग हाथ मिलाते हैं, ऐसे यहां लोग पैर पड़ लेते हैं। जैसे नमस्कार करते हैं ऐसा पैर पड़ लेते हैं।

ओशो की ऑखें

Contains - Contents +

1. ओशो की ऑखें
2. धूप में हो गई
3. रब पाना हो तो
4. राम का नाम
5. ओशो की महफिल
6. ओशो अपने हाथों से

ओशो फ्रेगरेंस की ओर से प्रेम निमंत्रण

कुंडलिनी साधना शिविर
18 - 23 जुलाई 2022

अद्वैत साधना शिविर
25 - 30 जुलाई 2022

स्थान:-
समर्थगड, महाराष्ट्र, पुणे

मा अमृत प्रिया

स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

सहयोग राशि प्रति व्यक्ति -
AC Room - ₹9000
HUT Rooms - ₹7800
NON-AC Rooms - ₹7200
Dormitory Rooms - ₹6000

पंजीकरण के लिए संपर्क करें
(10 AM - 8 PM)
7028019775, 8888858340
9890341020, 9464247452

oshofragrance RajneeshFragrance
www.oshofragrance.org

गुरु पूर्णिमा पर विशेष

ओशो के श्री चरणों में अर्पित

ओशो आये शरण तुम्हारी ।
तन मन धन ऐसे सदगुरु पे
लाख-लाख बलिहारी
ओशो आये शरण तुम्हारी ।

अंतर में जब ध्यान कराया, इक गोविंद का छोर दिखाया
नाद-नूर के दो पंखों से, सद्गुरु सोया होश जगाया ।
नील गगन में चांदनी छिटकी, रात हुई उजियारी
ओशो आये शरण तुम्हारी ।

बर्फ की उजली चादर पिघले, आसमान में बादल उमड़े
झील में रिमझिम पानी बरसे, फूल खिले हैं गुलशन महके
रंग बदलते इस जीवन में, देखूं छवि तुम्हारी
ओशो आये शरण तुम्हारी ।

अहंकार से ओमकार का, निर्मल पथ हमको दिखलाया
क्षण-क्षण जीना हमें सिखाकर, जीवन को इक जश्न बनाया
हो सुमिरन तो रहे हृदय में, मूरत सदा तुम्हारी
ओशो आये शरण तुम्हारी ।

मांग मिटी इच्छा सब छूटी, हानि लाभ की गिनती छूटी
जो होता है सो अच्छा है, ऐसी जीवन दृष्टि फूटी
अब सुल्तान बने बैठे हैं, दर के तेरे भिखारी
ओशो आये शरण तुम्हारी।

– स्वामी नीलांचल

हंस दो जरा...!

ट्रेन में दो महिलाएं बात कर रही थी।
एक कह रही थी- कभी-कभी मैं बेवजह ही रूठ जाती हूँ
दूसरी ने पूछा-क्यों ?
क्यों कि किसी ने कहा था कोई हसीना जब रूठ जाती है तो और भी हसीन हो जाती है.

इसको जल्दी-जल्दी पढ़ो!!

chai, coffee
chai, coffee
chai, coffee

Congratulation आप रेलवे स्टेशन पर काम करने के लिए Select हो गए हैं

दुख इस बात का नहीं कि,
श्रीमती घर का काम करवाती है
तकलीफ ये
है कि काम हो जाने के बाद

सहेली से फोन पर कहती है।
ये आदमी किसी काम का नहीं

Teacher asked a Sindhi student:

You have Rs. 4,000 and your best friend message you: saying "I need Rs. 2000. Then your wife messages you: I need Rs. 1000"

What are you left with?
Sindhi: Rs. 4000 and 2 unread messages!!

नौकरी के लिए इंटरव्यू चल रहा था... बहुत लम्बी लाइन लगी हुई थी...
गेट पर लिखा था
अंदर आने के लिए जो सबसे कम शब्द बोलेगा, उसे नौकरी दी जाएगी...
अब कोई कहता था :- may I cm in sr
कोई कहता था :- क्या मैं अन्दर आ सकती हुं।
कोई कुछ कहता, कोई कुछ कहता....
तभी अपने जैसे एबले का नम्बर आया
उसने कमरे के गेट में गर्दन भीतर डाली और बोला
:- घुसूं ?

राज्य की मुहर

–ओशो

कोई डेढ़ हजार वर्ष पहले चीन के सम्राट ने सारे राज्य के चित्रकारों को खबर की कि वह राज्य की मुहर बनाना चाहता है। मुहर पर एक बांग देता हुआ, बोलता हुआ मुर्गा, उसका चित्र बनाना चाहता है। जो चित्रकार सबसे जीवंत चित्र बनाकर ला सकेगा, वह पुरस्कृत भी होगा, राज्य का कलागुरु भी नियुक्त हो जायेगा। और बड़े पुरस्कार की घोषणा की गयी।

देश के दूर-दूर कोनों से श्रेष्ठतम चित्रकार बोलते हुए मुर्गे के चित्र बनाकर राजधानी में उपस्थित हुए। लेकिन कौन तय करेगा कि कौन-सा चित्र सुन्दर है। हजारों चित्र आये थे। राजधानी में एक बूढ़ा कलाकार था। सम्राट ने उसे बुलाया कि वह चुनाव करे, कौन-सा चित्र श्रेष्ठतम बना है। वही राज्य की मुहर पर जायेगा।

उस चित्रकार ने उन हजारों चित्रों को एक बड़े भवन में बंद कर लिया और स्वयं भी उस भवन के भीतर बंद हो गया! सांझ होते-होते उसने खबर दी कि एक भी चित्र ठीक नहीं बना है! सभी चित्र गड़बड़ हैं! एक से एक सुन्दर चित्र आये थे। सम्राट स्वयं देखकर दंग रह गया था। लेकिन उस बूढ़े चित्रकार ने कहा, कोई भी चित्र योग्य नहीं है!

राजा हैरान हुआ। उसने कहा, 'तुम्हारे मापदंड क्या हैं, तुमने किस भांति जांचा कि चित्र ठीक नहीं हैं।'

उसने कहा, मापदंड एक ही हो सकता था और वह यह कि मैं चित्रों के पास एक जिंदा मुर्गे को ले गया और उस मुर्गे ने उन चित्रों के मुर्गों को पहचाना भी नहीं, फिक्र भी नहीं की, चिंता भी नहीं की! अगर वे मुर्गे जीवंत होते चित्रों में तो वह मुर्गा घबराता या बांग देता, या भागता, लड़ने को तैयार हो जाता! लेकिन उसने बिलकुल उपेक्षा की, उसने चित्रों की तरफ देखा भी नहीं! बस एक ही क्राइटेरियन, एक ही मापदंड हो सकता था। वह मैंने प्रयोग किया। कोई भी चित्र मुर्गे स्वीकार नहीं करते हैं कि चित्र मुर्गों के हैं।

सम्राट ने कहा, यह तो बड़ी मुसीबत हो गयी। यह मैंने सोचा भी नहीं था कि मुर्गों की परीक्षा करवायी जायेगी चित्रों की! लेकिन उस बूढ़े कलागुरु ने कहा कि मुर्गों के सिवाय कौन पहचान सकता है कि चित्र मुर्गे का है या नहीं ?

राजा ने कहा, 'फिर अब तुम्हीं चित्र बनाओ।'

उस बूढ़े ने कहा, 'बड़ी कठिन बात है। इस बुढ़ापे में मुर्गे का चित्र बनाना बहुत कठिन बात है।'

सम्राट ने कहा, 'तुम इतने बड़े कलाकार, एक मुर्गे का चित्र नहीं बना सकोगे ?'

उस बूढ़े ने कहा, 'मुर्गे का चित्र तो बहुत जल्दी बन जाये, लेकिन मुझे मुर्गा होना पड़ेगा। उसके पहले चित्र बनाना बहुत कठिन है।'

राजा ने कहा, 'कुछ भी करो।'

उस बूढ़े ने कहा, 'कम से कम तीन वर्ष लग जायें, पता नहीं मैं जीवित बचूं या न बचूं।'

उसे तीन वर्ष के लिए राजधानी की तरफ से व्यवस्था कर दी गयी और वह बूढ़ा जंगल में चला गया। छह महीने बाद राजा ने लोगों को भेजा कि पता लगाओ, उस पागल का क्या हुआ ?वह क्या कर रहा है ?

लोग गये। वह बूढ़ा जंगली मुर्गों के पास बैठा हुआ था!

एक वर्ष बीत गया। फिर लोग भेजे गये। पहली बार जब लोग गये थे, तब तो उस बूढ़े चित्रकार ने उन्हें पहचान भी लिया था कि वे उसके मित्र हैं और राजधानी से आये हैं। जब दोबारा वे लोग गये तो वह बूढ़ा करीब-करीब मुर्गा हो चुका था। उसने फिक्र भी नहीं की और उनकी तरफ देखा भी नहीं, वह मुर्गों के पास ही बैठा रहा!

दो वर्ष बीत गये। तीन वर्ष पूरे हो गये। राजा ने लोग भेजे कि अब उस चित्रकार को बुला लाओ, चित्र बन गया हो तो। जब वे गये तो उन्होंने देखा कि वह बूढ़ा तो एक मुर्गा हो चुका है, वह मुर्गे जैसी आवाज कर रहा है, वह मुर्गों के बीच बैठा हुआ है, मुर्गे उसके आसपास बैठे हुए हैं। वे उस बूढ़े को उठाकर लाये। राजधानी में पहुंचा, दरबार में पहुंचा।

राजा ने कहा, 'चित्र कहां है ?'

उसने मुर्गे की आवाज की! राजा ने कहा, 'पागल, मुझे मुर्गा नहीं चाहिए, मुझे मुर्गे का चित्र चाहिए। तुम मुर्गे होकर आ गये हो। चित्र कहां है ?'

उस बूढ़े ने कहा, 'चित्र तो अभी बन जायेगा। सामान मंगा लें, मैं चित्र बना दूं।' और उसने घड़ी भर में चित्र बना दिया। और जब मुर्गे कमरे के भीतर लाये गये तो उस चित्र को देखकर मुर्गे डर गये और कमरे के बाहर भागे।

राजा ने कहा, 'क्या जादू किया है इस चित्र में तुमने ?'

उस बूढ़े ने कहा, 'पहले मुझे मुर्गा हो जाना जरूरी था, तभी मैं मुर्गे को निर्मित कर सकता था। मुझे मुर्गे को भीतर से जानना पड़ा कि वह क्या होता है। और जब तक मैं आत्मसात न हो जांऊ, मुर्गे के साथ एक न हो जांऊ तब तक कैसे जान सकता हूं कि मुर्गा भीतर से क्या है, उसकी आत्मा क्या है ?'

आत्म-एक्य के बिना, जीवन के साथ एक हुए बिना, जीवन के प्राण को, जीवन की आत्मा को भी नहीं जाना जा सकता। जीवन का प्राण ही प्रभु है। वही सत्य है। जीवन के साथ एक हुए बिना कोई रास्ता नहीं है कि कोई जीवन को जान सके।

– नेति-नेति, प्रवचन नं. 4 से संकलित

गुरु पूर्णिमा महोत्सव आमंत्रण

जुलाई–अंक

मानसून

कृपया *pdf* खोलिए

एवं

रचनाओं का आनन्द उठाईए।

अपने साहित्य–प्रेमी मित्रों को फारवर्ड करना न भूलें।

ध्यान साधना शिविर कार्यक्रम

सूचनाः ऑनलाइन कार्यक्रम अब शनिवार से शुक्रवार

Date	Programe	Place
18-23 July	Kundalini Awakening Retreat कुण्डलिनी जागरण शिविर	Samarthgad, Maharashtra 7028019775, 8888858340
23-29 July	Kundalini Awakening Retreat कुण्डलिनी जागरण शिविर	ONLINE
25-30 July	Adwait Sadhana Shivir अद्वैत साधना शिविर	Samarthgad, Maharashtra 7028019775, 8888858340
6-12 August	Adwait Sadhana Shivir अद्वैत साधना शिविर	ONLINE
20-26 August	Geeta Meditation Retreat-5 गीता ध्यान यज्ञ - 5	ONLINE
3-9 September	Shiv-Shakti Sadhana Shivir-3 शिव-शक्ति साधना शिविर-3	ONLINE
3-8 September	Shiv-Shakti Sadhana Shivir-3 शिव-शक्ति साधना शिविर-3	Osho Meditation Commune, Hisar, HR 9205170237 9518402527
17-23 September	Osho Loving Awareness Retreat ओशो प्रीतिपूर्ण जागृति शिविर	ONLINE

पंजीकरण एवं अधिक जानकारी हेतु

सुबह 10 बजे से रात 8 बजे के बीच संपर्क करें

9464247452, 9311806388, 9811064442

9466661255, 9890341020, 8889709895

विभिन्न स्थलों पर हुए शिविरों की झलक

26 जून को हयातपुर, पंजाब में एक दिवसीय शिविर का कुशल संचालन मा ध्यान शून्यो ने किया।

लंदन में ध्यान की गंगा बह रही मस्तो बाबा के संग जून 2022 के अंतिम सप्ताह में। जुलाई के पहले सप्ताह अमेरिका में बहेगी।

Mystics Meditation Retreat, Press conference & Swami Shailendra Saraswati ji's Birthday Celebration at Kasauli, Himachal Pradesh

Panipat, Haryana

Katni, M.P.

Ghaziabad,UP

अधिक जानकारी व संपर्क सूत्र

Osho fragrance Numbers -
9464247452, 9311806388, 9811064442,
9466661255, 9890341020, 8889709895

Youtube page - Rajneesh Fragrance

Facebook page - Rajneesh Fragrance

Instagram - Osho Fragrance

Twitter - Rajneesh Fragrance

oMeditate App -
Osho Fragrance's Mobile App•••

Keep up to date with Osho Fragrance program schedules and live events. Read the latest articles, Osho books, watch the newest videos on various topics, listen to bhajans by Ma Amrit Priya Ji, and participate in guided meditation techniques.

Ask questions to our Masters Swami Shailendra Saraswati and Ma Amrit Priya. Get automatic notifications on key events and daily quotes of Osho wisdom.

Download our official Android App on google play store by searching oMeditate or by clicking on the below link-

Note: The contents are getting updated daily, please keep watching this space for more to come.

Download Osho Hindi & English Books from the link -

contact@oshofragrance.org

ओशो सुगंधा
के पिछले अंक...

ओशो सुगंध मासिक ई-पत्रिका जो पढ़ी, देखी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें समाधि में डूबने, आनंद व भाव-विभोर से भरपूर प्रवचनो और भजनों के ऑडियो-वीडियो लिंक्स दिए गए हैं।

नियमित रुप से ई-पत्रिका प्राप्त करने हेतू, अपने मोबाइल नं. को पंजीकृत करवाने के लिए सामने दिए गए चिह्न को दबाएं।

पत्रिका को खोलने के लिए पुस्तक वाले चिह्न को दबाएं।

अभी तक के सभी अंकों के लिऐ चिह्न का दबाकर उन्हे देख सकते हैं।

जैसे महावीर की मूर्ति है। इस मूर्ति पर अगर कोई बहुत देर तक चित्त एकाग्र करे और फिर आंख बंद कर ले तो मूर्ति का निगेटिव आंख में रह जाएगा। जैसे कि हम दरवाजे पर बहुत देर तक देखते रहें, फिर आंख बंद कर लें, तो दरवाजे का एक निगेटिव, जैसा कि कैमरे की फिल्म पर रह जाता है, वैसा दरवाजे का निगेटिव आंख पर रह जाएगा। और उस निगेटिव पर भी ध्यान अगर केंद्रित किया जाए तो उसके बड़े गहरे परिणाम हैं।

तो महावीर की मूर्ति या बुद्ध की मूर्ति का जो पहला प्रयोग है, वह उन लोगों ने किया है, जो अशरीरी आत्माओं से संबंध स्थापित करना चाहते हैं। तो महावीर की मूर्ति पर अगर ध्यान एकाग्र किया और फिर आंख बंद कर ली और निरंतर के अभ्यास से निगेटिव स्पष्ट बनने लगा तो वह जो निगेटिव है, महावीर की अशरीरी आत्मा से संबंधित होने का मार्ग बन जाता है। और उस द्वार से अशरीरी आत्माएं भी संपर्क स्थापित कर सकती हैं। यह अनंत काल तक हो सकता है। इसमें कोई बाधा नहीं है।

–महावीर मेरी दृष्टि में–4